ऋतु-संहार

लेखक की अ॒य पुस्तकें

कारा	
आधी की नीवें	
एक छोड एक	५ ००
गोरखनाथ और उनका युग	१० ००
एटीगोने	२ ००
ईडीपस पाप, प्रेम और मत्यु	४ ००
हि॒दी साहित्य की धार्मिक और सामाजिक पूव पीठिका	प्रेस म

कालिदासकृत

ऋतु-संहार

(सस्कृत पद्य हि दी-अग्रेजी अनुवाद तथा १६ रगीन चित्रो सहित)

रागेय राघव

आत्माराम एण्ड सस
दिल्ली चण्डीगढ जयपुर लखनऊ

प्रकाशकीय

महाकवि कालिदास के ऋतु सहार का सस्कृत साहित्य म एक विशिष्ट स्थान है। काव्य और नाटक महाकवि को अमर कर गये हैं, पर बहुत कम लोग इस तथ्य से परिचित होगे कि 'ऋतु सहार महाकवि कालिदास का एक मात्र गीति काव्य है और कला की दृष्टि से वह उनकी शेष रचनाओ को पीछे छोड गया है।

कालिदास मुख्यतया सयोग शृगार' के कवि थे। ऋतु सहार के षड ऋतु वणन म उनकी शृगार रस प्रतिभा अबाध व उ मुक्त होकर प्रवाहित हुई है। कारण ? उनक माग म न किसी प्रकार का कथा का बधन था न मर्यादा की अगला। मेघदूत व कुमार सभव भी निस्सदेह शृगार रस की अनूठी काय कृतियाँ हैं, पर मेघदूत म कथा के बधन न और कुमार सभव मे 'मर्यादा की अगला' ने कवि को अप्रतिहत-गति नही रहन दिया। मेघदूत मे उ ह अपने आपको वर्षा ऋतु के वणन तक सीमित रखना पडा, और कुमार सभव मे शिव पावती के प्रति पूजा बुद्धि के कारण वे खुल कर नहीं खेल सके। किंवदती तो यहा तक है कि कुमार सभव के आठ सग पूरे करने के बाद कवि को अपनी कलम रोक देनी पडी। शिव पावती क स भोग शृगार क उनके चित्र इतने उत्तेजक थ कि उस काल का साहित्य जगत उ ह बर्दाश्त न कर सका। किंवन्ती के अनुसार, कुमार सभव के शेष नौ सग बाद के कवियो ने जसे-तसे पूण किये।

ऋतु सहार म कवि के सामन ऐसी कोई बाधा नही थी। भिन भि न ऋतुओ के वणन क व्याज से शृगार रस की तमाम बारीकियो का कवि ने सफलता पूवक रहस्योद्घाटन कर दिया है। शृगार रस के विविध आरोहो अवरोहों का यह एक प्रकार से दुलभ एलबम है।

स्वर्गीय डा० रागेय राघव की सधी हुई लखनी ने ऋतु सहार के एक साथ तीन अनुवाद प्रस्तुत कर दिय हैं। पहला अनुवाद हिन्दी पद्यो म दूसरा अग्रेजी पद्यो म, और तीसरा चित्रकला के माध्यम से। कहना कठिन है कि तीनो म से कौन सा रूपातर दूसरे से बढकर है।

हिदी जगत म इस प्रकार का प्रयत्न अपने आप मे एकदम अपूव एव अनूठा है।

प्रथम सर्ग
ग्रीष्म

CANTO I
SUMMER

प्रिय ! आया ग्रीष्म खरतर !
सूर्य भीषण हो गया अब चद्रमा स्पृहणीय सुदर,
कर दिये हैं रिक्त सारे वारिसचय स्नान कर कर,
अन्त सुदर सान्ध्यवेला शाति देती है मनोहर,
मन्द मन्मथ का हुआ है वेग अपने आप चुप कर,
दीर्घ ताप निदाघ देखो, छा गया कैसा अवनि पर,
प्रिय ! आया ग्रीष्म खरतर !

प्रचण्डसूर्य स्पृहणीयचन्द्रमा सदावगाहक्षतवारिसचय
दिनान्तरम्योऽभ्युपशान्तमन्मथो निदाघकालोऽयमुपागत प्रिय।

With the blazing sun the longed for moon
Tranquil cupid, beauteous close of day
Emptying the reservoirs by repeated baths
Sweet love ! now summer is come

सुघर मधुर विचित्र हैं जलयंत्र मंदिर औ' गृहा में,
चंद्रकान्ता मणि लटकती झूलती वातायनों में,
सरस चन्दन लेप कर तन ग्लानि हरने को निरत मन,
व्यस्त हैं सब लो प्रिये ! अब हँस उठा है नील निस्वन,
तिमिर हर कर, अमृत निर्झर शांत शशधर मुस्कराया,
प्रिये खरतर ग्रीष्म आया !

निशा शशाङ्कक्षतनीलराजय क्वचिद्विचित्र जलयन्त्रमन्दिरम्
मणिप्रकाराः सरसं च चन्दनं शुचौ प्रिये यान्ति जनस्यसेव्यताम् ।

Lovely fountains play in Variegated homes
Chandra Kanta[1] jems dangle
loosely in the windows
Men besmearing sandal on their bodies
seek shelter from heat
Cool nectar flows from the moon beams
Soothes the drowsy eyes

---

1 Name of the Jem It drips when moonbeams touch it

प्रिया मुख उच्छवास कपित सुप्त मन्न जगा रहे हैं,
गीत तन्त्री से उलझ कर गूज कर पुलका रहे हैं,
शात स्तब्ध निशीथ म सुरभित मनोहर हम्यतल म
गीत गतिलय म विमुग्ध कामी पिपासा म विकल हैं
गूजती झकार पर मनुहार स्वर रह रह कँपाया
प्रिय खरतर ग्रीष्म आया।

सुवासित हम्यतल मनोहर प्रियामुखोच्छवासविकम्पित मधु
सुतन्त्रिगीत मदनस्य दीपन शुचौ निशीथऽनुभवति कामिन।

The breaths of the sweetheart fragrant,
thrill and make the drowsy cupid smart
And charms that stream with the lyre s note
tinkle on the fragrant palace roofs —
Nay give the lovers restless lust encore

मेखला में बँधे दुकूल में ढके नितम्ब मनोहर हुए हैं
अलसभार नितम्ब मोहन चित्र में रचित हुए हैं
हार से आभरण में स्तन चन्दनाचित दिख रहे हैं
शुद्ध स्नान कषाय गंधित अंग अनंग सम हँसता
रूप की ज्योत्स्ना बिछा कर ग्रीष्म का अवसाद हरता
कामिनी कामियों को तृप्ति देती हैं मधुरतर
प्रिय आया ग्रीष्म सुन्दर !

नितम्बबिम्बैः सदुकूलमेखलैः स्तनैः सहाराभरणैः सचन्दनैः
शिरोरुहैः स्नानकषायवासितैः स्त्रियो निदाघं शमयन्ति कामिनाम्।

Strings of pearls dangle on the women s
quivering sandal smeared breasts
Clean bathed bodies of the damsels are scented sweet
Fleshy hips are covered with thin raiment
and girdle of gold
Dark tresses of hair play with the breeze
gratifying the desirous lovers beauty speaks —
Nons avons change tout cela[1]

1 We have changed all that (Fr)

क्वणित नूपुर गुंज लाक्षा रागरञ्जित चरण धर धर
प्रिय नितम्बिनि सलज पग पग पर गुंजाती हंस कल स्वर
मदन छवि साकार करती स्वर्ण रशना को डुला कर,
तुहिन सि मित हार चन्दन लिप्त स्तन पर थिरथिरक कर
इन्द्रजाल न डाल दत, कर न किसका हृदय आतुर
प्रिये आया ग्रीष्म खरतर !

नितान्तलाक्षारसरागरञ्जितैर्नितम्बिनीनां चरणैः सनूपुरैः
पदे पदे हंसरुतानुकारिभिर्जनस्य चित्तं क्रियते समन्मथम्।
पयोधराश्चन्दनपङ्कचर्चितास्तुषारगौरार्पितहारशेखराः
नितम्बदेशाश्च सहेममेखलाः प्रकुर्वते कस्य मनो न सोत्सुकम्।

Like swan s sweet chuckle
nupurs[1] jingle on the Laksha[2] painted feet
When the damsels with heavy rumps do move
the dangling girdles tinkle sweet
And when dewwhite pearl strings shake
On their quaking sandal smeared breasts
Oh ! whom do they not enchant ?

1 An ornament worn on the toes
2 Lac

स्वेद से आतुर, चपल कर वस्त्रनिजभारी हटा कर
योषिताएँ बाहुमूल सुरम्य अपने पोछ सत्वर
गोल उन्नत गौर यौवनमय स्तनों को घेर देती,
पारदर्श महीन अशुक म उन्हें है बांध लेती,
शांति व निश्वास ले उद्वेग ऊष्मा को हटा कर,
प्रिये आया ग्रीष्म सत्वर।

समुद्गतस्वेदचिताङ्गसंधयो विमुच्य वासांसि गुरूणि सांप्रतम्
स्तनेषु तन्वंशुकमुन्नतस्तना निवेशयन्ति प्रमदाः सयौवनाः ।

Perspiring women quickly remove perplexed
their heavy garments
and wipe off their underarm s sweat
And in thin gauzy vests do cover
their shapely upraised snow white breasts

शीत चदन सुरभिमयजल सिक्त व्यजनो का अनिल रे,
कुसुममाला से सुसज्जित पयोधर मासल मुखर रे,
वल्लकी के काकली कल गीत स्वर कोमल लहरते
सुप्त खोये काम को हैं फिर जगा देते पुलकते,
हम झीनी किरन विठ झिलमिल रिझानी रूप छाया,
प्रिये खरतर ग्रीष्म आया !

सचन्दनाम्बुव्यजनोद्भवानिल सहारयष्टिस्तनमण्डलार्पण
सवल्लकीकाकलिगीतनिस्वनैर्विबोध्यते सुप्त इवाद्य मन्मथ ।

Cool breeze of the fans
drenched with sandal perfumed water
Lovely plump breasts of women
Covered with flov er garlands
And notes from the lyre vibrating last
Ring a thrill in the formless love god s heart

निशा म सित हर्म्य म सुख नीद म सोई सुघरवर
योषिताओ क वदन को बार बार निहार कातर
चद्रमा चिर काल तक फिर रात्रिक्षय म मलिन होकर
लाज स पाण्डुर हुआ सा है विनम जाता थकित उर
प्रिय आया ग्रीष्म खरतर ।

सितेषु हर्म्येषु निशासु योषिता सुखप्रसुप्तानि मुखानि चद्रमा
विलोक्य नून भृशमुत्सुकश्चिर निशाक्षय याति ह्रियव पाण्डुताम ।

Perusing the faces of damsels sweet
sleeping with content on the crystal harem s roofs
The envious moon wanes of shame
consumed in the dawn
And goes tired and lost with a pale face

लुओ पर चढ घुमड घिरती धूनि रह रह हरहरा कर
चण्ड रवि के ताप स धरता धधकती आग होकर
प्रियवियोगविदग्धमानस जो प्रवासी तप्त कातर
असह लगता है उन्हें यह यातना का ताप दुष्कर
प्रिये आया ग्रीष्म खरतर ।

असह्यवातोद्धतरणुमण्डला प्रचण्डसूर्यातपतापितामही
न शक्यते द्रष्टुमपि प्रवासिभि प्रियावियोगानलदग्धमानस ।

Dust storms rage
Loo slaps with a dash
The scorching sun burns the earth enlaced
Insufferable torture to lovelorn hearts
this grievous heat becomes

तीव्र आतताप्त झुलस आग सा मरती तृषा से
सूखे तालू हरिण सघन भागते हैं वन धारे
वनांतर में तोय का आभास होता दूर क्षण भर
नील अञ्जन सदृश नभ को वारि समझ में विधुर मर
प्रिये आया ग्रीष्म खरतर !

मृगाः प्रचण्डातपतापिता भृशं तृषा महत्यापरिशुष्कतालव
वनान्तरे तोयमिति प्रधाविता निरीक्ष्य भिन्नाञ्जनसंनिभं नभः ।

Scorched by the blaze
with thirst unquenched
the parched throated deer with swift feet run
The blue of the sky and the forest s end
are the mirage once and again and again

सविभ्रमसस्मित नयन बंकिम मनोहर जब चलाती
प्रिय कटाक्ष से विलासिनि रूप प्रतिमा मद जगाती
प्रवासी उर में मन्मथ का नवल संदीपन जगा कर
रात शशि के चारु भूषण से हृदय जैसे भला कर,
प्रिये आया ग्रीष्म खरतर।

सविभ्रम सस्मितजिह्मवीक्षितैर्विलासवत्यो मनसिप्रवासिनाम्
अनङ्गसन्दीपनमाशु कुर्वते यथा प्रदोषा शशिचारु भूषणा ।

The formless love[1] god gets a form again
when the enchantress looks askance
at lovelorn travellers
and charms their confounded heart with ea e
Like night emblazoned by alluring ornament—
the moon

---

1 Indian cupid—Ananga

तप्त होकर रेणु पथ की आग सी बिखरा रही है
कुटिल गति से चपल चलता नाग को झुलसा रही है
सो अधोमुख उच्छ्वसित हो बारबार विषाद से भर
फणी बैठा है मयूर तले गहन भयभीति तज कर
प्रिय आया ग्रीष्म खरतर।

रविमयूखैरभितापितो भृश विदह्यमान पथि तप्तपांसुभि
अवाङ्मुखो जिह्मगति श्वसन्मुहु फणीमयूरस्य तले निषीदति।

The burning sands emit furious heat
afflict the snake with lowered hood panting
speeding with crooked creep aggrieved
Behold ! the snake now with fear no more
Rests in the shade at his enemy peacock s feet

तीव्र जलती है तपा अब भीम विक्रम वीर उद्यम
भूल अपना, श्वास लेता बार बार विश्रांत शमदम
खोलमुख निज जीभ लटका अग्रकेसरचलितकेशरि,
पास के गज भी न उठकर मारता है अब मृगेश्वर
प्रिये आया ग्रीष्म खरतर ।

तृषा महत्या हतविक्रमोद्यम श्वसन्मुहुर्दूरविदारितानन
न हन्त्यदूरेऽपि गजान्मृगेश्वरो विलोलजिह्वश्चलिताग्रकेसर ।

Malignant heat makes the thirst more acute
and now the king of the jungle of prowess famed
Forgetting his valour pants perturbed
Open mouthed dangling - tongued with
quivering manes,
And kills not the nearby elephants too

निरपदाग्र, विशुष्क अपने कण्ठ में अब शीत सीकर
ग्रहण करने, तीव्र रवि-कर तप्त पीड़ित आत कातर
व जलार्थी दीपगज भी केसरी का त्याग कर डर
घूमते हैं पास उसके अग्नि सी बरसी दुपहर भर
प्रिय आया ग्रीष्म खरतर।

विशुष्ककण्ठाहृतसीकराम्भसो गभस्तिभिर्भानुमतोऽनुतापिता
प्रवृद्धतृष्णोपहता जलार्थिनो न दन्तिन केसरिणो पि बिभ्यति।

Sweltered and thirsty
dry throated huge elephants
To come by cool showers—
just a few drops of water
Overcoming the fright of the lion
glide about him with no more fear

क्लात तन मन रे कलापी तीक्ष्ण ज्वाला मे घुलमता
वह म घरशीश बठे सप से कुछ भी न कहता,
भद्रमोथा सहित कदम शुष्क-सर को खोद अपन
पोतमण्डल स खनन कर भूमि के भीतर दुबकने
वराह के यूथ रत हैं सूर्य ज्वाला मे सुलग कर
प्रिये आया ग्रीष्म खरतर।

हुताग्निकल्प सवितुगभस्तिभि कलापिन क्लान्तशरीरचेतस
नभोगिन घ्नन्ति समीपवर्तिन कलापचक्रेषुनिवेशिताननम।
सभद्रमुस्त परिशुष्ककर्दम सर खनन्नायतपातमण्डल
रवेर्मयूखैरभितापितो भृश वराहयूथोविशतीव भूतलम।

Burnt by the flames of the sun
The nervous peacock says nothing to the snake
huddled in his feathers
And herds of wild boars dig the slushy
dried up mud of the pools for refuge
with their snouts
Extirpating the Bhadramotha[1] moss

1 Name of the moss—a kind

दग्ध भोगी तृषित बड छत्र फना जिसका घन
निकल सरस कीच भीग भेक घनातप छिपा अभयमन
निकाल सम्पूर्ण जाल मृणाल करत मीन व्याकुल,
भीत द्रुत सारस द्रुत गज परस्पर घर्षण करें घन,
एक हलचल मचा दिया पंकिल सरस सर हा तपातुर
लिये आया ग्रीष्म खरतर!

विवस्वता तीक्ष्णतरांशुमालिना सपङ्कतोयात्सरसाभितापित
उत्प्लुत्य भेकस्तृषितस्य भोगिन फणातपत्रस्य तलेनिषीदति।
समुद्धृताशेषमृणालजालकं विपन्नमीनं द्रुत भीतसारसम्
परस्परोत्पीडनसंहतगज कृत सर सान्द्रविमर्द कर्दमम्।

Beneath the parasols of the unshrivelled hoods
of the thirsty cobras
now fearless muddy frogs rest
emerging from the ponds
Joggling thirsty elephants with quick impact
pull out the lotus pedicels and stalks
frighten the fishes and cranes
and puddle the water of the pool
with splatter dash

रवि प्रभा से नुप्त शिर मणि प्रभा जिसकी ग्रस्त फणिधर
लोल जिह्व, अधीर मारुत पीरहा, आलीढ होकर
सूर्य्य ताप तपा हुआ विप अग्नि झुलसा आर्त्त कातर
तपाकुल मण्डूककुल को मारता है अब न विषधर
प्रिये ! आया ग्रीष्म खरतर !

रविप्रभोद्भिन्नशिरामणिप्रभाविलालजिह्वाद्वयलीढमारुत
विपाग्निसूर्यातप तापित फणी न हन्तिमण्डूककुल तपाकुल ।

With his shineless jewel[1]
in the blaze of the sun
the coiled up giddy tongued snake
breathes hard
and no more swallows the thirsty frogs

1 It is supposed that snakes keep jewels on their heads.

With upraised heads and nostrils wide
bloody dangling tongues and foamy mouths
the thirsty herds of buffaloes
emerge from the caves of the hills
in search of water
And leave behind the hovering hoof crushed dust

प्यास मे आकुल फुलाय नास रधन उठाकर मुख
रक्त जिह्व सफेन चचल गिरि गुहा से निकल उन्मुख
ढूढने जल चल पडा महिषीसमूह अधीर होकर
धूलि उडती है खुरो के घात से हो ऊर्ध्व सत्वर
प्रिय ! आया ग्रीष्म खरतर !

सफेन लालायतवक्त्र सपुट विनि सतालाहितजिह्वमु मुखम
तृषाकुल नि सतमद्रिगह्वरान्वक्ष्यमाण महिषीकुल जलम ।

With upraised heads and nostrils wide
bloody dangling tongues and foamy mouths
the thirsty herds of buffaloes
emerge from the caves of the hills
in search of water
And leave behind the hovering hoof crushed dust

१९

तीक्ष्ण दाह प्रचण्ड स हैं शुष्क शष्यसमस्त अकुर
परुष पवन प्रवग स पत्त उडाता शुष्क हरहर
खीच लता दीप्त दिनकर सरोवर जल क्षीणतर कर
ढूढता वन प्रात म दल उच्चस्थल अति भीत होकर
वारि सचय हो कही यदि शेष प्रियतर,
प्रिये आया ग्रीष्म खरतर ।

पटुतरन्वदाहाच्छुष्कसस्यप्ररोहा
परुषपवनवगोत्क्षिप्तसशुष्कपर्णा
दिनकरपरितापक्षीणतोया समन्ता—
द्विन्धति भयमुच्चर्वीक्ष्यमाणा वनान्ता ।

The entire foliage is arid and dry
The severe wind scatters the dried up leaves
The flaming sun evaporates the
waters from the ponds and the pools
The herds seek the highest spots in the jungle
for espying water frightened to the core

शीणपर्णों के द्रुमों पर हाँफता है अब विहगकुल
गिरि गुहा में लताकुञ्जों में छिपा है क्लान्त कपिकुल
नीलगायों के जलेच्छुक यूथ करते भ्रमण प्यासे,
कूप जल करते ग्रहण वे शरभ अकुटिल तपित हारे।
व्योम अपनी की पिपासा छा गई है अब निरंतर,
प्रिये! आया ग्रीष्म खरतर!

श्वसिति विहगवर्ग शीर्णपर्णद्रुमस्थ
कपिकुलमुपयाति क्लान्तमद्रेर्निकुञ्जम
भ्रमति गवययूथ सर्वतस्तोयमिच्छ—
ञ्छरभकुलमजिह्म प्रोद्धरत्यम्बु कूपात।

Thirsty birds pant on the
withered trees,
The monkeys hide in the caves and the groves
And the herds of wild cows roam dried tongued
And the terrible sarabhs[1] glut water
from the wells

1 A legendary animal

उषा प्रफुल्ल कुसुम्भ नूतन—स्वच्छविव सिंदूरप्यारे—
अग्नि, मारुतके प्रबलतम वेग से चल प्रतिदिशा रे
निकट के तरु लता शाखा घेर आलिंगन चपलमे
फैलता है ढेर अंगारे मुलगते भूमि तल म,
वह प्रचण्ड दवाग्नि हर हर सी मचाता वह्नि थरथर,
प्रिये आया ग्रीष्म खरतर ।

विकचनवकुसुम्भस्वच्छसिन्दूरभासा
प्रबल पवनवेगोद्धूतवेगेन् तूणम
तटविटपलताग्रालिङ्गनव्याकुलन
दिशि दिशि परिदग्धा भूमय पावकेन ।

Of full bloom*d kusumbh[1] hue or vermillion tinge
Fire, fanned by the gusts of the mighty wind
envelop the nearby trees and shrubs,
and spreads in the forests with a shower of flames

1 A flower

२२

पवन से वर्द्धित हुमकता गिरि गुहाएं घेरता है
पटुनिनादी शुष्क बांसों के स्थलों में फूटता है
फैल जाता है तृणों में वृद्धि पाता एक क्षण में
प्रान्तलग्नदवाग्नि मृग के समूहों को छेड़ पल में
कर रहा व्याकुल सभी को भीम होता चण्ड सत्वर,
प्रिये आया ग्रीष्म खरतर!

ज्वलति पवनवृद्धः पर्वतानां दरीषु
स्फुटति पटुनिनादैः शुष्कवंशस्थलीषु ।
प्रसरति तृणमध्ये लब्धवृद्धिः क्षणेन
ग्लपयति मृगवर्गं प्रान्तलग्नो दवाग्निः

Emboldened by the breeze
the fire enshrouds the caves
sprouts in the quaking dried up
cracking cluster of bamboo trees
spreads fast in the grass and straws
augmented every second
the forest fire bewilders the herd of deer

शाल्मलीवनमे प्रचुर हो स्फुरण करता है असीमित
कोटरा मे द्रमो के वह कनक गौर समान दीपित
पीतदलशाखा खडे जो दीघ तरु उनको गिराकर
अनिल कपित अनल चचल विपिनम चलता गरजकर,
प्रिय आया ग्रीष्म खरतर।

बहुतर इव जात शाल्मलीना वनपु
स्फुरति कनकगौर कोटरेपु द्रुमाणाम
परिणतदल शाखानुत्पत प्राशुवक्षा—
भ्रमति पवनधूत सवतोऽग्निवनान्ते।

The fire expands illimitably in the shalmali[1] forests
And in the hollows of the trees
pulsates with a golden streak
Extirpating the gigantic withered trees
The tornado sweeps and sets the entire forest ablaze

1 A tree

गजगवय मृगराज अपने वैर भाव बिसार, मुलस
मित्र से सब साथ होकर, गिरिगुहाश्रय भीत तज के
भागते हैं अब नदी के पुलिन की इच्छा हृदय धर,
कर दिये हैं मित्र भीषण अग्नि ने रिपु एक क्षण भर,
प्रिय आया ग्रीष्म खरतर।

गजगवयमृगेन्द्रा वह्निसंतप्त देहा
सुहृद इव समेता द्वन्द्वभाव विहाय
हुतवहपरिखेदादाशु निर्गत्य कक्षा—
द्विपुलपुलिनदेशान्निम्नगा संविशन्ति।

Flocked together now scorched by the flames
Elephants cows and lions are no more
hostile to each other
Frightened they abandon their respective shelters
afflicted by fire with fiery speed
make their way to the extensive river bank

कमल रत से व्याप्त, पाटल गधमय चल जल लहरत,
स्नान कर उस मुखसलिल से शशि किरन माला पहनत,
स्फटिक हर्म्यों म युवतियो क चपल सख के सहारे
बीत दीघ निदाघ जाता गीत झकृति की विभा स,
पिकस्वन! मरी सुराली रागिणी! आलाक मधर!
प्रिये आया ग्रीष्म खरतर!

कमलवन चिताम्बु पाटलामोद रम्य
सुख सलिल निषेक सेव्यचद्रांशुहार
व्रजतु तव निदाघा कामिनाभि समतो
निशि सुललितगीत हर्म्यपृष्ठे सुखन।

Bathing with the refreshing water cool
pervaded by lovely lotus blooms,
scented by the fragrance of rosy flowers
Enjoying the wreaths of flowers and sweet moonbeams,
with pleasure the summer night passes off,
Sweet songstress ! on the harem's happy roofs
in the company of charming damsels gay

द्वितीय सग

पावस

CANTO 2

PAVASA

आगई पावस प्रिये लो !

मत्त कुञ्जर सदृश जलधर नव्यसीकर से रिझाता
वज्रनादकठोर करकर राव मदल सा बजाता
कामिजन प्रियकांति उत्तम धार कर निज ज्वलनन में
उड़ा विद्युत की पताका राजवत आया गगनमे
सतत डबर भीम अबर,

आ गई पावस प्रिय लो !

ससीकराम्भोधरमत्तकुञ्जरस्तडित्पताकोऽशनिशब्दमर्दल
समागतो राजवदुद्धतद्युतिघनागमः कामिजनप्रियः प्रिये ।

Ahoy ! the bewitching cloud
moves like a wild elephant
And with fresh showers it captivates the hearts
And thunder lightning roars resonant
like the beat of drums
Enthralling the lustful hearts
with lovely splendour
the lustrous cloud with his lightning standard
steps into the sky like an Emperor proud
Sweet heart the rainy season has come

नील इंदीवरमधुर की भांतिवाले श्याम जलधर
प्रभिन्नाञ्जनराशि सस्तर-स्तर जम अतिपीनहोकर
गर्भिणी के स्तनाग्र की श्याम प्रभा छा स्निग्धतर
व्योम में उमड़े घुमड़कर, आगई पावस प्रिय लो!

नितान्तनीलोत्पलपत्रकान्तिभि क्वचित्प्रभिन्नाञ्जनराशिसन्निभ
क्वचित्सगर्भप्रमदास्तनप्रभ समाचित व्योम घन समन्तत ।

Lustrous like a lotus blue
or diffused stratums of sooty black
or deep blue like a pregnant woman's teats
— the clouds have pervaded the entire sky

चातकों के कुल तृषाकुल याचना करत सतत ही
तोय अवलवन जलद कर श्रुति मधुर ध्वनि अतिसुभगरा,
षड शतशन धार झर झर मद मद मधुर गमन कर
प्राणघन आल्हाद सीकर, आगई पावस प्रिये लो।

तृषाकुलैश्चातकपक्षिणां कुलैः प्रयाचितास्तोयभरावलम्बिनः
प्रयान्ति मन्दं बहुधारवर्षिणो बलाहकाः श्रोत्रमनोहरस्वनाः ।

Thirsty chatakas[1] implore incessantly
for the cool drops of Swati[2],
Fanned by the Zephyr with myriad streams
the hulking clouds reverberate with pleasing notes

1 Chataks — a bird
2 Swati — a shower in the Swati star s duration

अशनि रव मद्दल प्रतिध्वनि इन्द्रधनु अपना उठाये
तडित की चचल छिटकती चपल प्रत्यचा चढाय
तीक्ष्ण धारा पतन स शर तीव्र निज रह रह चला कर
प्रवासी जन के हृदय क्षत कर रहा है नील जलधर,
गूजती प्रतिध्वनि शिखर, आगई पावस प्रिये लो ?

वलाहकाश्चाशनिशब्दमर्दला सुरेन्द्रचाप दधतस्तडिद्गुणम
सुतीक्ष्णधारापतनोग्रसायकस्तुदन्ति चेत प्रसभ प्रवासिनाम ।

Thunder strikes like drums
With rainbow in his hand
Echoing his twanging bow string of lightning flash
And showering sharp drops of rain like piercing shafts
The clouds rend as under the love lorn hearts

नीलमणि वदूय्य से फूटे तणाकुर भूमितल पर
कदली के दल सुमासल झूलते हैं अब नवलतर
लालवीर वघूटिया फली हुई वर अङ्गना सी
श्यामरत्नो म अवनि सज शोभनीया कल्पना सी
चूमती है री उमग कर, आ गई पावस प्रिय लो!

प्रभिनवदूयनिभस्तणाङ्कर समाचिता प्रोत्थिनकन्दलीदलै ।
विभाति शुक्लेतररत्नभूषिता वराङ्गनेव क्षितिरिन्द्रगोपकै ॥

The grass and sedges are like
the amethyst deep
Kandali blossoms and red velvety
insects invade the grass
Earth dress d in lapis lazuli tint
appears a celestial jovial dame

नवल उत्सव स्फूर्ति भर कर सतत सुदरहृपदायी
शवल सुन्दर दीर्घ पुच्छा से सजे उत्सुक कलापी
ससभ्रम आलिंगनों औ चुबनो से विकल होकर
नत्य म होते प्रवत्त, निहार कर नभ म पयोधर —
कूकते रह रह उठा सिर, आगई पावस प्रिये लो !

सदा मनोज्ञ स्वनदुत्सवोत्सुक विकीर्णविस्तीर्णकलापशोभितम्
ससभ्रमालिङ्गनचुम्बनाकुल प्रवत्तनृत्य कुलमद्य बर्हिणाम।

Musically Cackling peacocks
spreading their lovely long iridescent feathers
kiss and embrace their peahens with honour
and dance with an elegant gait
beholding clouds in the sky

३३

जगे तण, अङ्कुर नये फिर फूट आये हैं सिहर कर
नये कोपल श्याम प्रिय द्रुमराजि पर शोभा खिला कर,
हरिणिया न नील कोंन खा लिये कोमल कुतर कर
मनोहारी नव वनश्री अति मधुर प्रावट जगा कर
पवन म भरती सुमभर, आ गई पावस प्रिये लो।

तणोत्करैरुद्गतकोमलाङ्कुरैर्विचित्रनीलैर्हरिणीमुखक्षतैः
वनानि रम्याणि हरन्ति मानसं विभूषितान्युद्गतपल्लवैर्द्रुमैः ।

Beautified by green lovely grass
and the bluish sprouting new scions
knawed at the ends by the does
and budding trees full of tender leaves
— The Vindhyan[1] Forest charms the heart

1 A mountain — Vindhyachala

भीम घोर गभीर गजन, वार वार प्रचण्ड प्रतिध्वनि
पवन झन झन, घन तिमिरमय, रात्रि म करता सननसन,
प्रिय मिलन अनुरागिणी अभिसारिकाओं को, चमक कर
तडित रेखा क्षीण, पथ दिखला रही है चपल सत्वर
एक पल बुझ पुन जल कर, आ गई पावस प्रिय लो!

अभीक्ष्णमुच्चध्वनता पयोमुचाघनान्धकारी कृतशवरीष्वपि
तडित्प्रभादर्शितमार्गभूमय प्रयान्ति रागादभिसारिका स्त्रिय ।

Again and again the clouds
roar with an unbearable echoing violent force
And winds howl in the dark blind night
Yet a stray streak of dazzling lightning flash
indica es to the lewd dame the path to the renderbous

द्रिमिक द्रिमद्रिमनाद घोर प्रचण्ड, जलधर रोर उठती,
तडित उद्वेजित हृदय म भीति गूज अछोर भरती
योपिताए शयनगह मे प्राणप्रिय को अङ्क म भर
भूलकर अपराध उनके स्नह सुखपानी निरतर
गूजती प्रतिध्वनि धरा पर, आ गई पावस प्रिय ला !

पयोधरर्भीमगभीरनिस्वनस्तडिद्भिरुद्वेजितचेतसो भृशम्
कृतापराधानपि योपित प्रिया परिष्वजन्त शयनेनिरन्तरम ।

Terrible and mighty thunderous roar
swells from the clouds
And fills in the lightning distressed hearts
spanless unbounded echo s fright
And young dames in their bed chambers
embrace their lovers
forgetting their delinquencies
as the echo throbs their hearts
with an excited zeal

३७

नील इदीवर सुघर से नेत्र से जलबिंदु गिरते
मधुर बिंवाधर समुज्ज्वल चारु पल्लव को भिगोते,
दूर है आभरण माला अगराग न लेप करती
प्रवासी प्रमदा निराशा से घिरी हैं दुख सहती
करकती स्मृतिया कसक कर आ गई पावस प्रिये लो !

विलोचनेन्दीवरवारिबिन्दुभिर्निषिक्तबिम्बाधरचारुपल्लवा
निरस्तमाल्याभरणानुलेपना स्थिता निराशा प्रमदा प्रवासिनाम ।

Tears drip from the lovely blue lotus eyes
And drench the tendril like rosy lips
No more do they bedaub their bodies
with saffron and musk,
nor wear ornaments or garlands redolent
The love lorn dames lament

देखते हैं भेक कुल सत्रस्त जिसको भीत होकर
वक्रगति चल भुजगम सा जो लहरतामत्त आतुर,
वण पाण्डुर, कीट रजतणमुक्त नव जल, भीम रव कर
बह चला है ऊर्मिवह त्वर, आ गई पावस प्रिये लो !

विपाण्डुरं कीटरजस्तणान्वितं भुजगवद्वक्रगति प्रसर्पितम्
ससाध्वसर्भेककुलनिरीक्षितं प्रयाति निम्नाभिमुखं नवोदकम् ।

The frightened frogs behold with awe
the muddy roaring waters
gliding fast, with a python s gait
yellowed by leaves and insects afloat

नवोत्पल की आस कर ये भृंगयूथ विमुग्ध हृदय से
कभी नर्तनरत मयूरों के पुच्छ चक्र में उलझते
कभी नव घन-स्वन हर्षित बन् बार बार चिंघारते वन
घन गजों के मदस्रावी गण्डस्थलों पर झूमते घ्राण
विमल उत्पलप्रभ गमक भर आ गई पावस प्रिय ला ।

विपन्नपुष्पा नलिनी समुत्सुका विहाय भृङ्गाः श्रुतिहारिनिस्वनाः
पतन्ति मूढाः शिखिनां प्रनृत्यतां कलापचक्रेषु नवोत्पलाशया ।
वनद्विपानां नववारिदस्वनैर्मदान्वितानां ध्वनतां मुहुर्मुहुः
कपोलदेशा विमलोत्पलप्रभाः सभृङ्गयूथैर्मदवारिभिश्चिताः ।

In vain expectations of new lotus blooms
the humming blacⅼ bees
sometimes get entangled into the circuitously spread
iridescent feathers of the dancing peacocks
or horer around the pungent juice
trickling from the lotus hued temples of huge elephants
they that peel again and again with upraised trunks
delighted by the roaring mirth of the clocds

वे नवल कमलाभ नीले घन उपल पर सतत गिरते
सतत चुंबन कर मधुर निझर निरंतर स्रवित झरते,
नृत्यरत होते कलापी विकल होते भीम भूधर
स्पर्श से तन में सिहर भर, आ गई पावस प्रिये लो !

नीलोत्पलाभाम्बुदचुम्बितोपला समाचिता प्रस्रवणैं समन्तत
प्रवृत्तनृत्य शिखिभि समाकुला समुत्सुकत्व जनयन्ति भूधरा ।

New lotushued blue clouds
Constantly shower down
and delicately kiss the stones and rivurlets flow
Peacocks dance and mightly mountains enrapture
the hearts with a thrill

अश्वकर्ण, कदम्ब, अर्जुन, केतकीवन कर विकंपित
सजलघनकण स्पर्श करके हुआ शीतल, सुरभि गंधित
मुखर वर्षासमीरण उत्सुक नहीं देता किसे कर
पुलक दोला पर झुला कर, आ गई पावस प्रिये लो!

कदम्बसर्जार्जुनकेतकीवन विकम्पयस्तत्कुसुमाधिवासित
सशीकराम्भोधरसङ्गशीतल समीरण क न करोति सोत्सुकम।

Shaking the Ketaki Arjuna,[1] Kadamba[1]
and Aswakarna[1] forests
laden with cool drops from the heavy clouds
Fragrant soothing winds of the rainy days
carry the hearts with their swinging quiver

---

1 Trees

४२

नितम्बा तक लहरते हैं घुघरवाले चिकुर चचल
पीन उन्नत स्तन स्फुरित हैं, वदन मे मधु गध विह्वल,
कुसुम के गधित सुरभ अवतस अपने गौर तन धर
कामिया म रति जगाती योपिताए मन रिझा कर,
रूप विद्युत जगमगा कर, आ गई पावस प्रिय लो !

शिरोरुहै श्रोणितटावलम्बिभि कृतावतस कुसुम सुगन्धिभि
स्तन सुपीन वदन ससीधुभि स्त्रिया रति सजनयन्ति कामिनाम ।

Long curly tresses reach the hips
The round plump breasts of women throb
sweet smelling are their mouths
And wearing fragrant flower garlands
on their snow white figures
damsels enchant the youthful hearts

चपल विद्युत इंद्रधनु भूषित नवल जल भार झुकते,
रत्नकुण्डल, दीप्तरशना, पीनस्तन नतभार करते
मेघ औ' प्रमदा नयन म कापत हैं एक छविभर,
शोभनीय मनोज्ञ मनहर, आ गई पावस प्रिये लो।

तडिल्लताशक्रधनुर्विभूषिता पयोधरास्तोयभरावलम्बिनः
स्त्रियश्च काञ्चीमणिकुण्डलोज्ज्वला हरन्ति चेतो युगपत्प्रवासिनाम्।

The lightning flash and the rainbow
bedeck the lowering clouds
Bejewelled earrings and lustrous girdle
adorn the damsels with heavy breasts
With a singular beauty they awe the admiring eyes

नव बकुल, मदुकेतकी, प्रिय मधपूर्ण कदम्ब लेकर
योषिताए गूथ माला धारती हैं अब सिरा पर
कान पर इच्छानुकूल सजा ककुभ द्रुम-नवल कलिका
कुसुम चयना मे सकल अवतस रचती हैं सुरसिका,
मधु का आमोद भर कर, आ गइ पावस प्रिय नो !

माला कदम्बनवकेसरकेतकीभिरायोजिता शिरसि बिभ्रतियोषितोऽद्य
कर्णान्तरेषु ककुभद्रुममञ्जरीभिरिच्छानुकूलरचितानवतंसकांश्च ।

On their lovely heads young women
wear the garlands of flowers plucked
from Vakul[1] Ketaki[1] or fragrant Kadamba[1]
With new buds of *Kakubha*[1] *they* adorn their ears
and bedeck themselves with flowers to
their heart s content

1 Trees

गध कालागुरु प्रचुर, चदनमधुरतन नेप कर कर
चिकुर रेशम से सुकोमल, पुष्प भूषण सुरभि जजर,
गुरुजना के कक्ष तज, शय्याभवन म हृदय आतुर
योषिताए रात्रि मे घननाद सुन, जाती चपलत्वर,
कामना अपनी जगाकर, आ गई पावस प्रिये लो[1]

कालागुरुप्रचुरचन्दनचर्चिताङ्गय
पुष्पावतससुरभीकृतकेशपाशा
श्रुत्वा ध्वनि जलमुचा त्वरित प्रदोषे
शय्यागह गुरुगृहात्प्रविशन्ति नाय ।

Besm aring their bodies with sweet smelling
Kalaguru[1] and sandal
with silken hair perfumed by frankincense
and adorned by flowers fragrant and sweet
young damsels with swift feet leave their elders rooms
and go to their lovers with desirous hearts
when the thunder claps resound in the sky

1 An incense

४६

नील कुवलय सा मनोरम नम्र जल भर, घुमड उन्नत,
मृदु पवन आघात से चल मन्द मन्द सुसान्द्र गुंजित
इन्द्रधनु ले मेघ चलता, पथिक वधुओं को विकल कर,
प्रिय वियोगाकुल हृदय को छीन लेता विवश सा कर,
रूप का शृंगार जलधर, आ गई पावस प्रिये लो !

कुवलयदलनीलैरुन्नतैस्तोयनम्रैर्—
मृदुपवनविधूतैर्मन्दमन्दं चलद्भिः ।
अपहृतमिव चेतस्तोयदैः सेन्द्रचापैः
पथिकजनवधूनां तद्वियोगाकुलानाम् ॥

Rising high yet laden with vapour
moving slowly in the sky fanned by the otiose breeze
Blue lotus-hued cloud with the rainbow's lustre
snatches away the hearts of the lovelorn brides .

नव सलिल से तापधारा बनान्त हर्षित झूमता है
आज नव आनन्द फूट कदम्ब तरु पर फूलता है
पवन से शाखा विकम्पित, प्रति कुसुम नव हर्ष आतुर
केतकी के रोम विकसित खिल उठा कान्तार हँस कर,
नाचते हैं मोर मनहर आगई पावस प्रिय लो !

मुदित इव कदम्बर्जात पुष्प समन्ता—
त्पवनचलितशाखै शाखिभिर्नृत्यतीव
हसितमिव विधत्ते सूचिभि केतकीना
नवसलिलनिषेकच्छिन्नतापो वनान्त ।

The summer scorched forest is thrilled with joy
at the touch of new showers
A new pleasure sprouts on the Kadamba tre s
and every branch shakes in a gaiety unexplained,
Every flower of Ketaki is blossomed
as if the forest has laughed
And peacocks dance with a crepitate joy

कांत सुंदर विमुग्ध वधुएं मालती गुथ कर वकुल में
धारती माला बना कर नव कुसुम शृंगार सिर में
मागधी के प्रिय मुकुल विकसित सुमन नव रूप भरते
और फुल्ल कदम्ब वन अवतंस कानों पर लटकते
देख श्यामल नील जलधर, आ गई पावस प्रिये लो!

शिरसि वकुलमाला मालतीभिः समेतां
विकसित नवपुष्पैर्यूथिकाकुड्मलैश्च,
विकचनवकदम्बैः कर्णपूरं वधूनां
रचयति जलदौघः कान्तवत्काल एषः ।

Beholding the beautiful cloud
lovely damsels adorn their braids
with garlands of Vakul interlaced with malati
and new blossomed flowers of delicate magadhi [1]
And now are swinging full grown Kadamba flowers
on their ears

---

1 Creepers

पीन उन्नत कुचाग्रों पर हार मोती के थिरकते,
सुघर दीर्घ नितंब पर सित सूक्ष्मपट चंचल लहरते
नव्य जल कण स्पर्श से प्रिय रोमराजि पुलक उठी है—
ललित त्रिवलीभङ्ग पर उन नारियों के हँस उठी है
मध्यदेश प्रसन्न सुखकर, आगई पावस प्रिय लो!

दधति वरकुचाग्रैरुन्नतैर्हार यष्टि
प्रतनुसित दुकूला यायत श्रोणिविम्ब,
नवजलकणसेकादुदगता रोमराजी
ललितवलिविभङ्ग मध्यदेशश्च नार्य ।

Pearl necklaces quiver on the teats
of the round plump breasts of women
White gauzy garments wave on their heavy and
lovely rumps
New showers send a thrill in the line of hair
on the trivali[1] of Vindhyan damsels

1 Three folds of skin on the abdomen

कुसुम भार विनम्र लासक वृक्ष की मृदु गंध से भर,
बिंदु नूतन अंबु के छू हो गया शीतल सिहर कर,
केतकी की सुरभिवाही मृदुल रज को घ्राण में भर,
प्रोषिताओं के हृदय को पावन लेता है सतत हर
पीत परिमल तप्त मनहर, आगई पावस प्रिये सा !

नवजलकणसङ्गाच्छीततामादधान
कुसुमभरनताना लासक पादपानाम
जनितरुचिर गन्ध केतकीना रजोभि
परिहरति नभस्वान प्रोषिताना मनासि ।

Cooled by the touch of fresh drops of water
And perfumed by the flower laden fragrant Lasak trees
Aye ! scented sweet by the Ketaki pollen,
the pleasing wind enraptures the lovelorn womne

दग्ध परुष प्रचण्ड भीषण ग्रीष्म की ज्वाला शिखा से
उच्चशिर वह विंध्य जनदायी-जलद आधार सार
धार लेता सघन जलभर विनत घन को नम्र होकर
एक आश्रय बन सतत आल्हादमय निज ताप खोकर
ग्लानि अगा की मिटा कर, आगई पावस प्रिय लो !

जलधर विनतानामाश्रयोऽस्माकमुच्चै—
रयमिति जलसेकैस्तोयदास्तोयनम्रा
अतिशयपरुषाभिर्ग्रीष्मवह्नेः शिखाभि
समुपजनिततापं ह्लादयन्तीव विन्ध्यम ।

Scorched by the summer's *terrific* heat,
the shelter of clouds, mighty Vindhya with joy
courteously holds the heavy clouds
on his high and proud head

निर्विकार सुबधु प्रेमी तरु विटप तण वल्लरीका,
कामिनी प्रिय हृदयहारी अगनगुण रमणीय नीला—
मेघ वर्षा काल का, दाता सतत सब ईप्सितो का,
नवन जीवन प्राणभूत समान है वह प्राणिया का,
गरज उठा रोर भर कर, आगई पावस प्रिय लो !

बहुगुण रमणीय कामिनीचित्तहारी
तरु विटपलताना बा ववो निर्विकार
जलदसमय एप प्राणिना प्राणभूता
दिशतु तव हितानि प्रायशा वाञ्छितानि।

Friend of trees and foliage
the charmer of women s hearts
multi virtuous immutably bounteous
Life of all life Rainy season has come

तृतीय सर्ग
शरद्

CANTO 3
SARADA

प्रिय ! आई शरद लो वर !
मधुर विकसित पद्म वदनी वास के अनुव पहनकर,
मत्त मुग्ध मराल कलरव मञ्जु नूपुर सा ववणित वर,
पकी सुदर शालियां सी देह निज कोमल सजा कर
रूप रम्या शोभनीया नववधू सी सलज अन्तर
प्रिये ! आई शरद लो वर !

काशांशुका विकच पद्म मनोज्ञवक्त्रा
सोन्मादहंसरव नूपुरनाद रम्या
आपक्व शालिरुचिरानतगात्रयष्टि
प्राप्ता शरन्नव वधूरिव रूप रम्या ।

Blooming lotus faced wearing fine clothes of reeds
Adorning her ripe paddy like beautiful body
with tinkling nupurs like sweet cackling of swans
Darling ! Sarada comes like a modest bride

५४

काश कुसुमों से मही औ चन्द्र किरणों से रजनियाँ
हंस से सरिता सलिल औ' कुमुदों से सरवर सुरम्य औ
कुसुम भार विनतसप्तच्छदों से उप वनान्त औ
मालतीश विरल घन प्रिय सुमनों से उपवन भी—
शुक्ल करती प्रति निशा स दीप्ति से अमल सुन्दर,
प्रिय ! आई शरद ला वर !

काशैर्मही शिशिरदीधितिना रजन्यो
हंसैर्जलानि सरितां कुमुदैः सरांसि
सप्तच्छदैः कुसुमभारनतैर्वनान्ताः
शुक्लीकृतान्युपवनानि च मालतीभिः ।

Whitening the earth with flowers of Kash[1]
And the night with sweet moonbeams
the river waters with swans the ponds with lotus blooms
The forests with flower laden Saptachchhadas
And the gardens with Malati
Sweetheart ! Sarada brightens the sequel

1 Reeds
2 A tree Every stem has seven leaves in it

चटुल शफरी सुभग काञ्ची सी मनोरम दीखती है
हंस श्रेणी धवल बैठी निकट मुक्ताहार सी हैं,
वे नितंबो से सुमासल पुलिन विस्तत है रुचिर तर
एक प्रमदा सी नदी होनी प्रवाहित मद मथर,
प्रिय आई शरद लो वर!

चञ्च-मनोज्ञशफरी रसना कलापा
पय तसस्थितसिताण्डज पङ्क्तिहारा
नद्यो विशाल पुलिनान्तनितम्बबिम्बा
म न्दं प्रयाति समदा प्रमदा इवाद्य।

Swift nimble fishes are the girdle
The Swan string on the banks is the necklace of pearls
And the beautiful banks are the heavy rumps
slowly the river flows like a woman enraptured

५६

रिक्त जल अभ्र रजत शङ्ख
मृणाल से सित गौर उज्ज्वल
छाए शतश व्याप्त दिशि दिशि
पवन वाहित शुभ्र बादल
व्योम-नृप का व्यजन करते
चमर शत शत ज्यों लहर कर
प्रिय आई शरद लो वर!

व्योम क्वचिद्रजतशङ्खमृणालगौर
स्त्यक्ताम्बुभिर्लघुतया शतश प्रयात
संलक्ष्यते पवनवेग चल पयोद
राजेव चामर वरैरुपवीज्यमान ।

Waterless clouds are white silvery bright
like lotus stalks or conch shells
Borne by the breeze the multi scattered clouds
fan the sky king like flapping whisks

प्रभिन्नाञ्जन दीप्ति से
अतिकान्तिमय है व्योम सारा
अरुण है बधूक जैसी
वसुमती हो पुष्पभारा
कमलवन आच्छादित—
सरसी पुलकती है सदय लो
कर न दे समुत्सुक
रूप यह किसके हृदय को ?
प्रिय ! आई शरद वर लो !

भिन्नाञ्जनप्रचय कान्ति नभो मनोज्ञं
बधूकपुष्परचितारुणता च भूमिः
वप्राश्च चारुकमलावृतभूमिभागाः
प्रोत्कण्ठयन्ति न मनो भुवि कस्य यूनः ।

Devoid of blackness the entire sky is radiant
The flower laden earth is of Bandhook[1] hue
Lotus blooms have pervaded the ponds
Oh whom do they not enchant?

1 Red flower

रिक्त जल अब रजत शख
मृणाल स मित गौर उज्ज्वल
यह शतश व्याप्त दिशि दिशि
पवन वाहित शुभ्र बादल
व्योम-नृप का व्यजन करते
चमर शत सा ज्यो लहर कर
प्रिय आई शरद ना वर !

व्योम क्वचिद्रजतशङ्खमृणालगौर
स्त्यक्ताम्बुभिलघुतया शतश प्रयात
सलक्ष्यत पवनवेग चल पयोद
राजव चामर वररुपवीज्यमान ।

Waterless clouds are white silvery bright
like lotus stalks or conch shells
Borne by the breeze the multi scattered clouds
fan the sky king like flapping whisks

प्रभिन्नाञ्जन दीप्ति से
अतिकान्तिमय है व्योम सारा
अरुण है बधूक जसी
वसुमती हो पुष्पभारा,
कमलवन आच्छादित—
सरसी पुलकती है सदय जो
कर न दे समुत्सुक
रूप यह किसके हृदय को ?
प्रिय ! आई शरद वर लो !

भिन्नाञ्जनप्रचय कान्ति नभो मनोज्ञ
बधूकपुष्परचितारुणता च भूमि
वप्राश्च चारुकमलावृतभूमिभागा
प्रोत्कण्ठयन्ति न मनो भुवि कस्य यूनः ।

Devoid of blackness the entire sky is radiant
The flower laden earth is of Bandhook[1] hue
Lotus blooms have pervaded the ponds
Oh whom do they not enchant?

---
1 Red flower

मन्दिर मथर चल मलयज
अग्रशाख विकंप आकुल
प्रचुर पुष्पोद्गम मनोहर
चारुतर ले नम कोपल,
मत्त भ्रमरा न पिया
मद प्रस्रवण हो विकल जिस पर
मधुर चमरिक वृक्ष चित्त
विदीर्ण किसका दें नहीं कर
प्रिये आई शरद लो वर !

मन्दानिलाकुलितचारु तराग्रशाख
पुष्पोद्गमप्रचयकोमल पल्लवाग्र
मत्तद्विरेफपरिपीतमधु प्रसेक
श्चित्तविदारयति कस्य न कोविदार ।

With quivering branches in the slow moving breeze
Laden with flowers and tendrils soft
with juice drunk black bees humming sweet
The chamarik tree rends asunder the hearts

१६

सुभग ताराभरण पहने
मुक्त घन अवरोध से अब
चंद्रवदनी, अमल ज्योत्स्ना
के दुकूलों में रुचिर सज
मुग्ध प्रमदा यामिनी
सर्वधिना है प्रति दिवस स्वर,
प्रिय आई शरद लो वर!

तारागणप्रवरभूषणमुद्वहन्ती
मेघावरोधपरिमुक्तशशाङ्कवक्त्रा
ज्योत्स्नादुकूलममलं रजनी दधाना
वृद्धिं प्रयात्यनुदिनं प्रमदेव बाला।

Wearing bright stars
shedding off cloud veils
Moon faced in garments of the sweet moon beams,
The damsil night is gay and juvenescent

घपिता है वीचिमाला
　　मुखो से कारण्डवो क
तीर भू आकुल हुई
　　कलहस औ' सारसकुला स,
कमल के मकरद स
　　आरक्त शवलिनी मनोहर
हस रव स जन हृदय म
　　प्रीति को जाग्रत रही कर,
　　प्रिये आइ शरद लो वर !

कारण्डवाननविघट्टितवीचिमाला
　　कादम्बसारसकुलाकुलतीरदेशा
कुर्वन्ति हसविरुत परितो जनस्य
　　प्रीति सरोरुहरजोऽरुणितास्तटिन्य ।

The waters are disturbed by the Karandava[1] beaks
The banks are crowded with sweet swans and cranes
The river is reddened by lotus pollen
And the cackling of swans arouses the feeling of love

1 Swan like bird

६१

रश्मि जाला ना बिछा
आल्हाद भरता जो हृदयहर
नयन उत्सव हिम फुही पर,
इदु भी है अब कठिनतर
पति विरह विप मिश्र शर क्षत
नारियो का ताप दुखकर,
प्रिय आइ शरद लो वर!

नेत्रोत्सवो हृदयहारिमरीचिमाल
प्रह्लादक शिशिरशीकरवारिवर्षी
पत्युर्वियोगविषदिग्धशरक्षताना
चन्द्रो दहत्यतितरा तनुमङ्गनानाम ।

Pleasing to the eyes the moon spreads a network of beams
And sprays cool rays now hard to stand
Lovelorn damsels afflicted by the poisoned dart of
desertion lament

फल भरानत शालियों को
    कर विकम्पित गुंज भर कर
लदे फूलों से झुकी
    द्रुम राजियां रह रह नचा कर
पवन उन उत्फुल्ल पंकज
    से ढके जल को हिलाकर
नलिनियों में सिहर भरता
    झूमकर हंसता मुखर हो,
तरुण हृदयों को मथित कर,
    निकल कर अत्यन्त चंचल ला !
    प्रिय आई शरद वर लो !

आकम्पयन् फलभरानतशालिजाला—
    न्यानर्तयंस्तरुवरान् कुसुमावनम्रान् ।
उत्फुल्लपंकजवना नलिनी विधुन्वन्—
    यूनां मनश्चलयति प्रसभं नभस्वान् ।

Shaking the ripe water rice plants with a murmuring note
Sending a rythmic quiver in the flower laden trees
Ringing on the blooming lotus pervaded ponds
    and thrilling the lotus petals and waters cool,
the cool breeze squelches the youthful hearts

मत्त हंस मिथुन विचरते
स्वच्छ फुल्लाम्भोज खिलते
मन्द गति प्रात पवन से
वीचियों के जाल हिलते
ज्योति में अवदात वे सर
हृदय हर लेते अवश कर
प्रिये आई शरद लो वर!

सोन्मादहंसमिथुनैरुपशोभितानि
स्वच्छप्रफुल्लकमलोत्पलभूषितानि।
मन्दप्रभातपवनोद्गतवीचिमाला
न्युत्कण्ठयन्ति सहसा हृदयं सरांसि।

Delighted pairs of swans roam in the forests
and fresh lotus flowers bloom
slowly the morning breeze vibrates the waters
Aye! The ponds spell unexplained charms

नष्टं धनुर्बलभिदो जलदोदरेषु
सौदामिनी स्फुरति नाद्य वियत्पताका।
धुन्वन्ति पक्षपवनैर्न नभो बलाका
पश्यन्ति नोन्नतमुखा गगनं मयूराः।

No more the Bala[1] Slayer Rainbow appears in the cloud
No more the lightning standard pulsates in the dark
Neither the Balaka wings stir the air
nor the peacocks stare at the sky with their raised hads

1 Bala—an Asura father of Vritra Indra killed him
Rainbow is supposed to be the bow of Indra—the God of Rains

2 A bird white with long wings

नृत्यहीन मयूर तज कर,
हंस कलरव से प्रमुदित गा,
ककुभ, नीप, कदम्ब, शाल,
तजे कुटज तज, काम प्रतिक्षण
फुल्लकुसुमित नन्द श्रीयुत
सप्तपर्णों पर चरण धर,
ग्रहण करता है वरासन,
स्थान या अपने वदन कर,
प्रिय आई शरद तो वर।

नृत्यप्रयोगरहिताञ्छिखिनो विहाय
हंसानुपैति मदनो मधुरप्रगीतान्।
मुक्त्वा कदम्बकुटजार्जुनसर्जनीपान्
सप्तच्छदानुपगता कुसुमोद्गमश्रीः।

Cupid deserts the peacock s feathers
and steps amidst singing swans
leaving Kakubha[1] Nipa[1] Kadamba[1] Shaal[1] and
Kutaja[1] trees
puts his foot on the beautiful flower laden Saptaparna[1]
Thus changes his abode

---

1 Trees

शेफालिकाकुसुमगन्धमनोहराणि
स्वस्थस्थिताण्डजकुलप्रतिनादितानि ।
पर्यन्तसंस्थितमृगीनयनोत्पलानि
प्रोत्कण्ठयन्त्युपवनानि मनांसि पुंसाम् ।

Pervading the sweet fragrance of lovely Sephalika[1]
Echoing the pleasing gardens with Kokil notes
And with lotus eyed meandering does
Cupid enchants all men

1 a flower

बार बार सुवर्ण सौगंधिक
नलिन औ' कैरवा को
कंप में भर अधिक होकर
शीतलित छू जल कणों को
धार कोमल पल्लवों से
पर तुषार जल कण को
कर रहा प्रात समीरण
सतत उत्कंठित हृदय को,
प्रिये आई शरद वरना।

कह्लारपद्मकुमुदानि मुहुर्विधुन्व
स्तत्संगमादधिकशीतलतामुपेत
उत्कण्ठयत्यतितरां पवन प्रभाते
पत्रान्तलग्नतुहिनाम्बुविधूयमान ।

Quaking the golden white and red lotus flowers
cooled by the waters,
Bearing the morning dew from the tender leaves
The breeze of the dawn soothes the hearts

सम्पन्नशालिनिचयावृतभूतलानि
स्वस्थस्थितप्रचुरगोकुलशोभितानि
हंसैः ससारसकुलैः प्रतिनादितानि
सीमान्तराणि जनयन्ति नृणां प्रमोदम् ।

The earth is covered by the tender well irrigated paddy
Happy herds of cows graze and bellowing roam
Cranes and swans flock together and cackle in sweet notes

अङ्गनाओं की ललित गति जीतते हैं हंस सुंदर,
इंदुमुख की कांति, होकर कमल विकसित ले चले हर,
नील नयनों के विलोकन आ गये इन्दीवरों में
कुटिल विभ्रम वक्र भ्रू के चपल प्रिय तरंगों में,
कुसुमभारानत लता श्यामा छिपी जो पल्लवों में,
साभरण मृदु बाहुओं की कांति हर लेती क्षणों में
चारुस्मित अवदात दंताभास को कंकेलि हरता
चंद्रकांति मनोज्ञ रस मुग्ध नव मालति में पुलकता,
रूप का शृंगार जीवन रागिणी में भर रहा स्वर।
प्रिय आई शरद लो वर।

हंसैर्जिता सुललिता गतिरङ्गनानामम्भोरुहैर्विकसितैर्मुखचन्द्रकान्तिः
नीलोत्पलैर्मदकलानि विलोचनानि भ्रूविभ्रमाश्च रुचिरास्तनुभिस्तरङ्गैः ।
श्यामा लताः कुसुमभारनतप्रवालाः स्त्रीणां हरन्ति धृतभूषणबाहुकान्तिम्
दन्तावभासविशदस्मितचन्द्रकान्तिं कङ्केलिपुष्परुचिरा नवमालती च ।

Victorious swans have snatched away the beauty of the
damsels gait
Their moon face loveliness is now in the lotus blooms
The charm of the eyes has gone to the blue lotus flowers
The curve of the brows has slipped into ripples gay
The flower laden Shyama creeper half hidden in the leaves
wins over the damsels arms adorned with ornaments
And Kankoli steals the smile beautifying glitter
of the teeth
The lustre of the moon throbs in the malati

ललित वनिता मालती के
    नवल कुसुमों को उगातीं
सघन घुंघराले सुकोमल
    नील केशों को सजातीं
इस सुन्दर लोल कानों
    में कनक दीप्तिमय वर
नील कमलों को झुलातीं
    सब उतार विविध रचिपर
    प्रिय आई शरद ता वर।

केशान्नितान्तघननीलविकुञ्चिताग्रा—
    नापूरयन्ति वनिता नवमालतीभि
कर्णेषु च प्रवरकाञ्चनकुण्डलेषु
    नीलोत्पलानि विविधानि निवेशयन्ति।

Charming damsels adorn their curly blue hair
    with malati's fresh flowers
And on their ears now beside their gold rings
    swing the blue lotus flowers

सजल मुक्ताहार चदनलिप्त
स्तन पर डोल ह्लित
विपुल रम्य नितब जब
रशना क्वणन से हैं पुलकत
हृष्टमन से चपल वनिता
चल रही हैं र हृदय हर
चरण कमला म रणन
मन्जीर क्षण क्षण भर उठे स्वर,
प्रिये आइ शरद ला वर !

हारै सच न्दरम स्तनमण्डनानि
श्रोणीतट सुविपुल रसनाकलाप
पादाम्बुजानि कलनूपुरशेखरश्च
नाय प्रहृष्टमनसा य विभूषयन्ति ।

Pearl strings quake on the Sandal smeared brea ts
Lovely rumps are thrilled at the girdle's tinkling
Happily young women walk
and Nupuras[1] ring on the lotus feet at every step

1 an orrament for the ankles

विगत घन नभ में विचर कर चंद्रतारा जगमगाते
कुमुद आच्छादित सरों में बिंब उनके थरथराते
राजहंस मनाते कलरव तीर पर करते पुलक भर
और मरकतवर्णजल शोभा रुचिर करते थिरक कर
रूपशालिनि श्री उतरती है तरंगों में निखर कर
प्रिय आई शरद ना वर।

स्फुटकुमुदचितानां राजहंसाश्रितानां
मरकतमणिभासा वारिणा भूषितानाम्
श्रियमतिशयरूपां व्योम तोयाशयानां
वहति विगतमेघं चन्द्रतारावकीर्णम्।

Brightly shine the moon and stars in the clear sky
their reflection quivers in the lotus pervaded ponds
Royal swans sing on the banks
Lovely waters are of refulgent emerald hue

कैरवा क सग स अव है अनिल शीतल प्रवाहित
शुद्ध हैं नीलम दिशाए मेघ जाला स अवाधित
शुष्क पङ्क वसुमती पर विमल जल है स्फटिक सुदर,
बिखर उपगन विचित्र तारा व्योम म हैं मत दमकत्र,
विमल किरणें शात अब बरसा रहा अमत सुधाकर
प्रिय आइ शरद ला वर !

शरदि कुमुदसङ्गाद्वायवा वान्ति शीता
विगतजलदवृन्दा दिग्विभागा मनोज्ञा
विगतकलुषमम्भ श्यानपङ्का धरित्री
विमल किरणचद्र व्योम ताराविचित्रम् ।

The breeze is cooled by the touch of lotus blooms
clear is the cloudless sky bright blue,
Devoid of mires the earth has crystal clear waters
Bright is the moon and the stars in the sky are resplendent

कमल कर ल चद्रजितमुख
तरणिया कुसुमाभरण रच
कात कर गह, शाति मे
एकात म जाती विसुध उर,
मदन का बल प्रबल निज
तारुण्य म रखती सजोकर,
प्रिये आई शरद लो वर ।

कर कमल मनोना कातससक्त हस्ता
वदनविजितचद्रा काश्चिदयास्तरुण्य
रचित कुसुमगधि प्रायशो याति वेश्म
प्रबलमदनहेतो सूक्त सङ्गोक्तरम्या ।

With lotus in hand wearing fragrant flower wreaths
lovely damsels with faces that vanquish the moon
tread into lonely qnarters lustfully
hand in hand with their lovers

सुरत रुचि निज वर युवतिया
मग सखियों के मनोहर,
मुखर अनुगत, रे नितबिनि
मृदुविलासिनि स्मित सनजधर
प्रगट करती कामशर के
तीव्र भेद विनोद सुख कर
प्रिये आई शरद लो वर !

सुरतरुचिविलासा सरसखीभि समेता
असमशरविनाद सूचयन्तिप्रकामम
अनुगतमुखराभि श्रोणिमध्ये विनाद
शरदि तरुणकान्ता सूचयन्ति प्रमोदान ।

In sarada heavy hipped and smiling deep
Lustful young damsels fond of Cupid s game
out spoken and shy
relate the mysteries of voluptuous sports—
to their hand maids

७६

सुन्दरी की कान्त छवि से
भोर में पङ्कज खुमारा
मुग्ध के सुकुमार कर से
अरुण दृग चपल सिहरन
चन्द्रबिम्ब विलीन होता
अस्त, कुमुदिनि मौन मुख कर,
प्रोषिता वधू सी हसित यह
शोकमय है बना कातर
प्रिय ! आई शरद सो वर !

दिवसकर मयूखैर्बोध्यमान प्रभाते
वरयुवतिमुखाभ पङ्कज जृम्भतेऽद्य
कुमुदमपि गतेऽस्ते लीयते चन्द्रबिम्बे
हसितमिव वधूना प्रोषितेषु प्रियेषु ।

The touch of the morning rays of the Sun
awakens the lotus like a young woman s face
Now sets the moon and Kumudini[1] laments
sneered it like a love lorn bride

1 a flower water lily

नील नयना श्री मनोहर
उत्पलों म देख जाग्रत,
कनक रशना हस-कल स्वर
मत्त करता क्वणन अमृत,
देखकर बधूक म प्रेयसि
अधर छवि रे उजागर
भ्रात उर रोते पथिक जन
सुख अतीत का स्मरण कर,
प्रिय आई शरद लो वर।

असितनयनलक्ष्मी लक्षयित्वोत्पलेषु
क्वणितकनककाञ्ची मत्तहस स्वनेषु
अधररुचिरशोभा व धुजीवे प्रियाणा
पथिकजन इदानी रोदिति भ्रातचित्त ।

Beholding the beauty of the blue eyes in the lotus blooms
And the lustre of the lips in the Bandhook flowers
In the sweet swan cackle hearing the girdle s tinkling
Travellers weep and lament remembering their joys of yore

७८

हस कूजन निज गणित
        मणि नूपुरो म छोड सुन्दर
कान्तिमय बधूक छवि को
        रुचिर अधरो पर सजा कर,
चद्रशोभा सुन्दरी तरुणी
        वदन म अब निहित कर
शरद् श्री सुभगा चली
        अ यत्र अ तर्धान होकर,
    प्रिय आई शरद् ला कर !

स्त्रीणा विहाय वदनेषु शशाकलक्ष्मी
        काम्य च हसवचन मणिनूपुरेषु
बन्धूककान्तिमधरेषु मनोहरेषु
        क्वापि प्रयाति सुभगा शरदागमश्री ।

So leaving her swan s cackle
        in the tinkling bejewelled nupuras
And in the lips securing the Bandhopk s lustre
Now placing moon s glory in the woman s face
        the Sarada beauty departs

फुल्ल सरसिज आनना, अति
रुचिर शाभिनि कुमुद वर्णा,
न य विकमित काश के सित
वस्त्र पहने, कमल नयना,
शरद ऋतुमद आतुरा चल
कामिनी सी मदस्मित धर,
प्रीति अग्रिम चित्त म
देती जगा है भ्रू चला कर,
प्रिये आई शरद लो वर।

विकचकमलवक्त्रा फुल्लनीलोत्पलाक्षी
विकसितनवकाशश्वेतवासो वसाना
कुमुदरुचिरकान्ति कामिनीवो मदेय
प्रतिदिशतु शरद्वश्चेतस प्रीतिमग्र्याम्।

Lotus hued Blooming lotus faced
lotus eyed smiling benevolently
wearing the white reed robes
Lovely Sarada awakens love in hearts
with mirthful eye brows like a damsel young

चतुर्थ सर्ग
हेमंत

लो प्रिये हेमत आया !
नव प्रवालादगम कुसुम प्रिय, लाध्र पुष्प प्रफुल्ल सुन्दर,
पक्क शाली, तुहिन हत हो पद्म खाय मलिन होकर,
किंतु कुकुम राग रञ्जित अब विलासिनि पनिस्तन हैं,
स्वर्णालिनि वक्ष पर अब कुन्द इन्दु तुषार सित है
हार मोती के रह हिल, नयन म उल्लास छाया,
लो प्रिय हेमत आया !

नवप्रवालोद्गमसस्यरम्य प्रफुल्ललोध्र परिपक्वशालि
विलीनपद्म प्रपतत्तुषारा हेमन्तकाल समुपागतोऽयम ।
मनाहरैश्चन्दनरागगौरैस्तुषारकुन्देन्दुनिभश्चहारै
विलासिनीना स्तनशालिनीना नालक्रियन्ते स्तनमण्डलानि ।

Charming is the florescence and fresh flowers sprout
Paddy is ripe and beauteous lodhra blossoms
Lotus blooms have faded struck by the cold touch
of snow
And lustful round breasted dam els
adorn their plump curves with kumkum
Pearl necklaces whiter than frost
quiver on their teats
sweet heart ! now Hemanta has come

न बाहुयुग्मेषु विलासिनीनां प्रयान्ति सङ्गं वलयाङ्गदानि
नितम्बबिम्बेषु नवं दुकूलं तन्वंशुकं पीनपयोधरेषु
काञ्चीगुणं काञ्चनरत्नचित्रं नो भूषयन्ति प्रमदा नितम्बान्
न नूपुरैर्हंसरुतं भजद्भिः पादाम्बुजान्यम्बुजकान्तिभाञ्जि।

No more are bracelets bright on the arms of women
nor lovely raiments on their rumps exist
nor gauzy vests cup their well shaped breasts
And lotus beauty is no more in their feet
Bejewelled girdles of gold apart no more
their lustre to their lovely lips
Aye ! The jingling nupuras have lost
their swan s lovely cackling at every step
as they are no more on their feet

लिप्त कालीयक तनों पर
सुरत उत्सव का प्रसाधन,
मुखकमल पर दिख रहा
कस्तूरिका का पत्र लेखन,
चिकुर कालागुरु सुगंधित
धूप से, यों तन सजाया
लो प्रिय हेमन्त आया।

गात्राणि कालीयकचर्चितानि
सपत्रलेखानि मुखाम्बुजानि
शिरांसि कालागुरुधूपितानि
कुर्वन्ति नार्यः सुरतोत्सवाय।

Cupid s festival enthralls the hearts of women
with kaliyaka they besmear their persons
and paint their fair lotus faces with musk
and perfume their tresses with kalaguru fumes

सुरत श्रम से पाण्डु कृश मुख हो चले, नये रूप धर कर,
तरुण कामी पा रहे हैं हर्ष का उत्कर्ष मनहर
दशन से क्षत ओष्ठ पीड़ित हो गये हैं अति करते
इसलिये वे उच्चहास विमुख होकर हैं न करते
रति चतुर स्त्री ने उसे मुस्कान में अपनी छिपाया
लो प्रिय हेमंत आया!

रतिश्रमक्षामविपाण्डुवक्त्रा
सम्प्राप्तहर्षाभ्युदयास्तरुण्य
हसन्ति नोच्चैर्दशनाग्रभिन्ना
प्रपीड्यमानानधरानवेक्ष्य।

Deep indulgence in Cupid's game
has exceeded its limits
Lo now young and lovely faces
are pale and wan with undue exultation
Toils of love have left the lips so bitten
that the damsel accomplice in youthful secrecy
laughs not aloud for fear of pain
in the lips

शोभनीय सुडौल स्तन का
    नश अतिमदन हुआ है
अत मन म शीत क
    कुछ खेद सा आतुर हुआ है
भोर पत्ता के किनारा
    पर तुहिन जो दिप रहा है
अश्रु हैं हमत उर क,
    पर व्यथा न है छिपाया,
लो प्रिय हमत आया !

पीनस्तनार स्थलभागशोभा
    मासाद्य तत्पीडनजातखेद
तृणाग्रलग्नैस्तुहिन पतद्भि
    राक्रन्दतीवोषसि शीतकाल ।

The whole night ripe round breasts
    have been crushed with a wild delight
winter s heart laments the damsels plight
Bright snow drops on the edges of leaves in the
are the tears of his sorrow for others grief

प्रभूतशालिप्रसवैश्चिता
मृगाङ्गनायूथवि
मनोहरक्रौञ्चनिनादिता
सीमान्तराण्युत्सुकय

Pervaded by plentiful paddy the forest
looks lov
Herds of doe meander to and fro and
The sweet cackling of krounchas floats
and travels far be

नालइदीवर खिल हैं, मत्त कलरव हंस करते,
शीत स्वच्छ प्रसन्न सर में तरते हैं हृदय हरते,
प्रिय ! गौर तुषार छूकर सिहरती ठंडे पवन से
प्रिय विरहिणी लता दीन प्रियंगु की कंपित सततर
विलासिनी नित पाण्डु होती जा रही है,दुख समाया,
लो प्रिय हेमंत आया !

प्रफुल्लनीलोत्पलशोभितानि, सोन्मादकादम्बविभूषितानि
प्रसन्नतोयानि सुशीतलानि, सरांसि चेतांसि हरन्ति पुंसाम
पाकं व्रजन्ती हिमजातशीतैराधूयमाना सततं मरुद्भिः
प्रिये प्रियङ्गुः प्रियविप्रयुक्ता विपाण्डुता याति विलासिनीव

Blue lotus flowers bloom on the waters
Snow white swans echoing their enchanting songs
float on the crystal clear water of the ponds
Sweetheart ! the lovely Priyangu creeper love lorn
is pale and worn
and incessantly shivers at the touch of the
frost cold winds

प्रोषिता मृगनयनियाँ पथ निहारती हैं और भरभर
अश्रुनिर्झर स्मृतिस्नाती सोचती हैं आह भर भर
पुष्प आसव से सुरभित श्वासें, उस ओर मन भर
श्वास से सुरभित तनों का परस्पर आतुर लिपटा कर
काम रस में मदमत्त जैसे सो रहे सब कुछ भुलाकर
ना दिन कब आया !

मार्गं समीक्ष्यातिनिरस्तनीरं प्रवासखिन्नं पतिमुद्वहन्त्य
प्रवर्षमाणा हरिणेक्षणाद्य प्रयान्ति शीघ्र मनोरथानि
पुष्पासवामोदसुगन्धिवक्त्रो निःश्वासवातैः सुरभीकृताङ्गः
परस्पराङ्गव्यतिषङ्गशायी शेते जनः कामशरानुविद्धः

Lovelorn women there gaze at the lover's paths
Tears trickle down memory sighs and
the hearts bemoan
And here in ardent deep embraces of warm delight
The lovers sleep in erotic ecstasy drunk
Their scented breaths are perfumed with liquor sweet
distilled from the sweetest flowers

दन्त क्षत से अधर व्याकुल,
तरुण मद से नयन घूर्णित
पीन कुच कर सघन मर्दित
लेप सब करते विचर्णित
अङ्गना तन में सुरत ने
मधुर निर्दय भोग पाया
लो प्रिय हेमन्त आया !

दन्तच्छदं सव्रणदन्तचिह्नं
स्तनैश्च पाण्यग्रकृताभिलेखं ।
संसूच्यते निर्दयमङ्गनानां
रतोपभोगो नवयौवनानाम् ।

Kissbites bruise the lips
The eyes are full of intoxication s joy
cruel crushing of round breasts
removes all powders and leaves the
scratches of finger nails
young damsels wear the amorons toils
impressions on their young bodies

काचिद्विभूषयति दर्पणसक्तहस्ता बालातपेषु वनिता वदनारविन्दम्
दन्तच्छदं प्रियतमेन निपीतसारं दन्ताग्रभिन्नमवकृष्य निरीक्षते च ।
अन्या प्रकामसुरतश्रमखिन्नदेहा रात्रिप्रजागरविपाटलनेत्रपद्मा
स्रस्तांसदेशलुलिताकुलकेशपाशा निद्रां प्रयाति मृदुसूर्यकराभितप्ता ॥

When the warm rays of the winter's sun
descend on the earth
Some lovely women with mirrors in hands
Scrutinize their deep sucked kissbitten lips
and laugh with a silent joy
And some with tired bodies after night long
lustful cupid's sports
With sleepy eyes for want of slumber rosy red
sleep in the soft warmth of the rising sun
with open shoulders covered by luxuriant hair

६१

निश सुरत भर रति श्रमवश
शिथिल गात गात अंग
स्फुरित अंग औ स्तन
पुलक मुकुलित हुए अधर
सब अंग पर लगाती
स्निग्ध सुगंधी द्रव्य-
सा प्रिय हुए न आया !

अत्याशिथर सुरकेलिपरिश्रमेण
य गता प्रशिथिली कृतगात्रयष्टय ।
संहृष्यमाणपुलकोरुपयोधरान्ता
अभ्यञ्जनं विदधति प्रमदा सुशोभा ॥

Drowsy with the exertion of night's amorous sports
Languid and tired are their bodies
Hence with joyous content
young damsels massage their pulsating breasts
and throbbing thighs with perfumed oil

पके प्रचुर सुधान्य से
सीमांत ग्रामों के घिरे हैं
सतत सुंदर क्रौञ्च
माला स गले जिसके पड़े हैं
अगनगुण रमणीय प्रमदा—
चित्तहारी शीतकाया
तुहिनमय, हेमन्त सुख
देता सभी को, स्नेह छाया,
लो प्रिये हेमन्त आया !

बहुगुणरमणीयो योषितां चित्तहारी
परिणतबहुशालि व्याकुलग्रामसीमा।
सततमति मनोज्ञः क्रौञ्चमालापरीतः
प्रदिशतु हिमयुक्तः काल एष सुखं वः ॥

Ripe rich paddy pervades the countryside
Beautiful krounchas[1] are the pearls of his necklace
multivirtuous and lovely victor of damsels hearts
Sweetheart ! Hemanta showers benefaction on all.

---

1 birds

पचम सर्ग
शिशिर

CANTO 5
SISIRA

प्रिये शीतल शिशिर आई
हे वरोरु ! प्रवृद्ध देखो
शालियों औ ईख से अब
ढँक गई सुन्दर धारा है
कहीं होता क्रौञ्च कलरव,
उग्रकामी योषिताप्रिय—
काल है वेला सुहाई
प्रिये शीतल शिशिर आई !

प्ररूढशालीक्षुचयावृतक्षिति
क्वचित्स्थितक्रौञ्चनिनादराजितम् ।
प्रकामकाम प्रमदाजनप्रिय
वरोरु काल शिशिराह्वय शृणु ॥

Abundant paddy pervades the earth brightly
Krounchas cackle sweetly at places
Oh ! Smooth thighed enchantress !
Bitter winter has come
winter the desire of lustful youth
and young women s delight

बन्द वातायन गृह में अग्नि ही जब सूर्य लगता,
पहन भारी वस्त्र करती लोक सेवा युवति अबला।
शीत शशि की रश्मियां चंदन, स्फटिक की हर्म्य छत वे
शरद ज्योत्स्ना, सान्द्रशीतल तुहिन कणमय चल पवन रे
कुछ नहीं अब कुछ नहीं है याद सब सूनी हुई है,
सघन शीत तुषार गिरता चंद्र छवि पीली हुई है
पाण्डु होकर गगन कँपते, रात्रि बेला दुखदाई
प्रिये शीतल शिशिर आई।

निरुद्धवातायनमन्दिरोदरं हुताशनो भानुमतो गभस्तयः
गुरूणि वासांस्यबलाः सयौवनाः प्रयान्ति कालेऽत्र जनस्य सेव्यताम्।
न चन्दनं चन्द्रमरीचिशीतलं न हर्म्यपृष्ठं शरदिन्दुनिर्मलम्
न वायवः सान्द्रतुषारशीतला जनस्य चित्तं रमयन्ति साम्प्रतम्।
तुषारसंघातनिपातशीतलाः शशाङ्कभाभिः शिशिरीकृताः पुनः
विपाण्डुतारागणचारुभूषणा जनस्य सेव्या न भवन्ति रात्रयः।

Closed are the shutters and fire serves for the sun
in the abodes
Wearing heavy garments
young women satisfy their lovers with a great delight
Nights are sooty devoid of moonbeams
That Sandal fragrance those harem terraces
Aye they are no more in vogue to please
nor pleases the biting cold wind any more
Thick snowfalls, chill bites and burns
chilled is the moon now pale and hazy
Dim stars shiver in the distant dark,
Nocturnal happiness is closed in doors
Painful are the nights

ऊष्म लेपों को लगा, ताम्बूलमाला ग्रहण करके
कमल नयनी अब मुदित हो प्रिय सुखासव पान करके
प्रचुर कालागुरु सुरभिमय धूप सेवन सतत करके
समुत्सुक हो शयनगृह को चल पड़ी सीत्कार करके
योषिताएं भीतहृदया कृत के अपराध अनगिन
बार बार सकंप करती रोष से जो सतत तर्जन
सुरत अभिलाषिणि बनी सब बात वह पिछली भुलाई
प्रिये शीतल शिशिर आई ।

गृहीतताम्बूलविलेपनस्रज पुष्पासवामोदितवक्त्रपङ्कजा
प्रकामकालागुरुधूपवासित विशन्ति शय्यागृहमुत्सुका स्त्रिय ।
कृतापराधा बहुशो भितर्जिता सवेपथू साध्वसलुप्तचेतस
निरीक्ष्य भर्तृ सुरताभिलाषिण स्त्रियो पराधा समदा विसस्मरु ।

Chewing fragrant betels anointing sweet perfumes
Having drunk with pleasure sweet wine
wearing flower garlands and scented with kalaguru fumes
the lotus-eyed damsels enter their bed chambers
With anxious lust
With anger lapsing into forgiveness
young damsels forget their frightened lovers
oft chided numerous faults
With nymphomania they smile with a joy

९६

तीव्रराम विलास की अभिलाप स निशि दीघ सह के
सुखद निर्दय सुरत क्रीडा कलिश्रम ग्लदित हृदय से
रात्रि के अवसान म जातीं स्त्रिया मथर चरण चल।
रक्त प्रिय कौशेय सुन्दर पहन, कशो म कुसुम कल
धार कूर्पासक सुघर म बाधती है विकल निज स्तन
रूपमय शृगार करती हिमागम म ले पुलक तन।
पीत कशर और कुकुम स रगे स्तन पुलक यौवन—
ऊष्मामय विकल पीडित कामिया को दे मधुर सुख
मुक्त सोती या कि गधित श्वास स कर कमल कपित
रात्रि म निज कामिया क सग ल मन्नीय सुरभित
काम रति को जगाती मदिरा प्रहृष्टा युवतिया व
ढाल पीती और मोहित छीन लती सुऊविया व।
गात म ऊष्मा पुलकती अवहिमागम म लुभाई
प्रिय शीतल शिशिर आई।

प्रकामकामयुवभि सुनिदय निशासु दीर्घास्वभिरामिताश्चिरम
भ्रमन्ति मन्द श्रमखेदितोरव क्षपावसाने नवयौवना स्त्रिय ।
मनोज्ञकूर्पासकपीडितस्तना सरागकौशेयकभूषितोरव
निवेशितान्त कुसुम शिरोरुहै विभूषयन्तीव हिमागम स्त्रिय ।
पयोधर कुङ्कुमरागपिञ्जर सुखोपसेव्यनयौवनोष्मभि
विलासिनीभि परिपीडितोरस स्वपन्ति शीत परिभूय कामिन ।
सुगन्धिनिश्वासविकम्पितोत्पल मनोहर कामरतिप्रबोधकम
निशासु हृष्टा सह कामिभि स्त्रिय पिबन्ति मद्य मदनीयमुत्तमम ।

With lustful desire they bore the cruel Cupid's sports—
throughout the night and now with tired limbs
young damsels in the wake of dawn
stroll out of their bed chambers

In scarlet silken robes they adorn themselves
lovely flowers they wear on their hair
and cover their breasts in cotton vests
Or sleep in winter nights with lovers sweet
in deep embraces painting their breasts with
keshara[1] and kumkum
Or shaking the lotus flowers with fragrant breaths
they drink with their lovers sweet scented wine
exciting the lovers passionate zeal

---

1 Saffron
2 Red powder or paint

मिट गया मद राग, कोई योषिता है प्रात वेला
कृत निविड कुच कोर प्रिय आलिंगना से काम मेला
भक्त प्रियतम से हुई निज देह को तब देखती सी
शयन गृह तज कामिनी जाती लजाती सी विहँसती।
अगर सुरभित धूप मोदित केशपाशा से मनोहर
स्रस्त हैं जब कुसुममाला, केशपाशा को हटाकर
गुरुनितम्बिनि क्षीण कटि कमनीय शोभा से रिझाती
शयनगृह को कामिनी गत यामिनी कर त्याग जाती।
सद्य जल से धौत सुंदर हेमकल्हर चूमते हैं
कानाक लोचन गुलाबी बिंबलकर पहुंचते हैं
और कंधा पर लहरते बालरेशम से मृदुल रे
उषा में गृहमध्य में साक्षात लक्ष्मी रूप धरके
योषिताएं दीखती हैं दीप्त आभा में समाई,
प्रिय शीतल शिशिर आई।

अपगतमदरागा योषिदेका प्रभाते कृतनिविडकुचाग्रा पत्युरालिङ्गनेन
प्रियतमपरिभुक्त वीक्षमाणा स्वदेहं व्रजति शयनवासाद्वासमन्यहसन्ती।
अगुरुसुरभिधूपामोदितं केशपाशं गलितकुसुममालं कुञ्चिताग्रं वहन्ती
त्यजति गुरुनितम्बा निम्ननाभि सुमध्या उषसि शयनमन्या कामिनी चारुशोभा।
कनककमलकान्त सद्य एवाम्बुधौत श्रवणतट निषक्त पाटलोपान्तनेत्र
उषसि वदनबिम्बरंससक्तकेशै श्रियइव गृहमध्ये संस्थिता योषितो द्य।

Lo a damsel with fading paints
casts glances on her swollen teats, paining with hard
embraces compressed
and beholds her body used by her lover s lust
smilingly leaves the bed chamber modestly

With perfume pyair and old flower wreaths
removing the curly hair from her face
some heavylipped woman enchanting the hearts
leaves the bed and goes outside in the
end of the night

The waking beauty with fresh golden lotus blooms
on their ears
long eyes rosy and playing locks of perfumed hair
sits refreshed in the home like shree herself golden bright

विपुल उरु के भार से सुख आत आनत मध्य सुदरि
रे सघनस्तन भार स कुछ नमित चलती मद मथर
सुरत बेला वेश ऊगा म तुरत उतार कर अब
अ यवस्त्रो को पहनकर तरुणिया देखो रही सज
मा कि नखक्षत याप्त स्तन के अग्रछोरो को निरखती
अधर किसलयछार पर उन दतक्षत का स्पश करती
हृदय पूरित लालसा रस से मुदित मोहित युवतिया
भोर म करती पुन शृगार विकसित न य छविया।
अरुण गालो की गुलाबी कमतक म झलमलाई
प्रिये शीतल शिशिर आई।

पथुजघनभरार्ता किचिदानम्रमध्या
स्तनभर परिखेदा म दम द व्रज त्य
सुरतसमयवेषा नशमाशु प्रहाय
दधति दिवसयोग्य वेषम यास्तरुण्य
नखपल्लवितभागा वीक्षमाणा स्तनाग्रा—
नधरकिसलयाग्र दन्तभिन्न स्पश त्य
अभिमतरममत न्य त्यस्तरुण्य
सवितुरुदयकाले भूषय त्याननानि।

Bowed in the middle with heavy thighs
moving slowly with heavy paining breasts
damsels change in the morning
their night dresses
or cast glances on their teats and nail scratched breasts
or behold their kiss bitten lips and
delicately feel with their fingers touch
With a delight of fulfilled amorous ecstasy
they dress themselves in the thrilling warmth
of the morning sun

मिष्ट गुड से पूर्ण, सुंदर
धान्य ईख सुस्वादु धारक
प्रबल सुरत सुकेलि से
कंदर्प दर्प प्रदीप्त कारक,
प्रियजनों से दूर हृदयों
को सतत संतापदायक,
शिशिर काल मनोज्ञ हो!
इस लोक का कल्याणवाहक
स्निग्धकज्जल गात! आयत
लोचने! नव ज्योति छाई!
प्रिये शीतल शिशिर आई!

प्रचुरगुडविकारः स्वादुशालीक्षुरम्यः
प्रबलसुरत केलिर्जात कंदर्पदर्पः
प्रियजनरहितानां चित्त संतापहेतुः
शिशिर समय एष श्रेयसे वाऽस्तु नित्यम्।

Full of Sweet Gur, and plentiful paddy and
sugarcane
the exciter of cruel cupid s sports
the tyrant to lovelorn hearts
Winter be the be refactor of all

षष्ठम सर्ग
वसंत

CANTO 6
VASANTA

प्रिये मधु आया सुकोमल
तीक्ष्ण सायक—आम्र बौर—
प्रफुल्ल की कर मे उठाये
भ्रमरमाला की मुखर
अभिराम प्रत्यञ्चा चढाये
सुरत शर से हृदय को
करता विदग्ध विदीर्ण व्याकुल
प्रिये ! वीर वसत योद्धा
आगया मदपूर्ण चचल
प्रिये मधु आया सुकोमल

प्रफुल्लचूताङ्कुरतीक्ष्णसायको
द्विरेफमालाविलसद्धनुर्गुण
मनासि वेद्धु सुरतप्रसङ्गिना
वसन्तयोद्धा समुपागत प्रिये।

With sharp shafts of mango blossoms in his hand
and the bow string of humming black beas
Aye ! rending asunder the heart with love darts
Sweet heart ! Warrior spring has come

द्रुम कुसुममय सलिल
सरसिजमय हुए, सुखपूर्ण यामिनि
पवन गंधित, रम्य रे दिन
कामरुचिमय युवति कामिनि,
वापियों के वारि में
मणि मेखला का रूप भरता
इन्दु छवि स्त्री को कुसुम दे
आम्र तरुओं को पुलकता
दे रहा सबको वसन्त
नवीन जीवन लालसा कल,
प्रिये मधु आया सुकोमल !

द्रुमा सपुष्पा सलिलं सपद्मं स्त्रियः सकामाः पवनः सुगन्धिः
सुखाः प्रदोषा दिवसाश्चरम्याः सर्वं प्रिये चारुतरं वसन्ते।
वापीजलानां मणिमेखलानां शशाङ्कभासां प्रमदाजनानाम्
चूतद्रुमाणां कुसुमान्वितानां ददाति सौभाग्यमयं वसन्तः।

Donating new flowers to trees lotus blooms to ponds
Beauty to nights and fragrance to the breeze
Loveliness to days and voluptuous
lust to the damsels
Rendering girdle s luster to the quivering ripples
Sweet moon s resplendence to the woman s face
And blossom s thrill to the mango trees
Spring comes bestowing new life to all

मृदु तुहिन से शीतकृत हैं
हर्म्य, चपक सुरभिमयशिर
योषिताएँ डालती उर
पर कुसुम के हार मनोहर
रक्त वर्ण कुसुम्भ से
सुंदर दुकूल नितम्ब पर हैं
और कुकुम राग के
अंशुक स्तना पर अति रुचिर हैं
विलासिनिया कान पर नव
कर्णिकार लगा रही हैं
सघन नीले चल अलक में
अब अशोक सजा रही हैं
मल्लिका नव फुल्ल, नूतन
कांति देती है समुज्ज्वल।
प्रिये मधु आया सुकोमल !

ईषत्तुषार कृतशीतहर्म्य सुवासित चारु शिर सचम्पकं
कुर्वन्ति नार्योऽपि वसन्तकाले स्तनं सहारं कुसुममनोहरं।
कुसुम्भरागारुणितदुकूलं नितम्बबिम्बानि विलासिनीनाम्
रक्तांशुकं कुङ्कुमरागगौररलंक्रियन्ते स्तनमण्डलानि।
कर्णेषु योग्यं नवकर्णिकारं चलेषु नीलेष्वलकेष्वशोकम
पुष्पं च फुल्लं नवमल्लिकायाः प्रयाति कान्तिं प्रमदाजनानाम्।

The harems are cooled by the mist
Fresh champaka[1] lends fragrance to the
heads of women
And damsels wear garlands of lovely flowers
On their hips are scarlet kusumbha[2] skirts
And kumkum hued vests cover their breasts
Lustfully they adorn their ears with karnikara[3]
And curly long bluish tresses with Asok[4]
New blossoms of mallika[5] add to their beauty
beyond reproach

---

1 a flower
2 a tree—but here it means red coloured
It is also an intoxicating drink
3 a yellow flower also red
4 flowers of Asok = a tree
5 a creeper

१०३

धवल चदन लेप पर
मित हार उर पर डोल सुन्दर
भुजाओ पर वलय अङ्गद
जघन पर रशना क्वणन कर,
नितबिनि उर अनङ्गातुर
म नवल श्री भर रहे हैं
हेम कमला स मुखो पर
पत्र लखन खिल रहे हैं
स्वेदकण मुक्तासदश
उस पत्र रचना म चलच चल
फल जात हैं नया
उन्माद नयनो म समाकुल
प्रिय आया मधु सुकोमल ।

स्तनेषु हारा सितच दनार्द्रा भुजषु सङ्ग वलयाङ्गदानि
प्रयान्त्यनङ्गातुरमानसानानितम्बिनीना जघनेषु काञ्च्य
सपत्रलेखेषु विलासिनीना ववत्रषु हेमाम्बुरुहोपमषु
रत्नान्तरे मौक्तिक सङ्गरम्य स्वेदागमो विस्तरतामुपति ।

Pearl strings quiver on white sandal pasted breasts
Bracelets on the arms and girdles on the thighs tinkle
Now bestow more beauty to the lustful
heavy hipped damsels
Patra Rachana[1] enchants beauty on the
golden lotus faces
Drops of perspiration amidst the paints
glitter like pearls and make the eyes lambent

1 Sandal paints on the face Marks which women make on the face to beautify it

शिथिल बंधन, काम व्याकुल
गात, अब उच्छ्वसित होते
कंत को पा पास उत्सुक
नारियों के हृदय होते,
काम स्त्रीतन को मन्दालस
और मधुर पाण्डु कृश कर
बार बार मनोज जृम्भित
कर रहा सौन्दर्य त्वरभर,
मदिर आलस नयन चंचल
पाण्डु गण्डस्थल हुए अब,
कठिन कर स्तन क्षीण कर कटि
पीन कर प्रत्येक क्षण उरु
कामिनी प्रति अंग म
कंदर्प स्थित होता पुलक चल
प्रिये मधु आया सुकोमल !

उच्छ्वासयन्त्यः श्लथबन्धनानि गात्राणि कंदर्प समाकुलानि
समीपवर्तिष्वधुना प्रियेषु समुत्सुका एव भवन्ति नार्यः।
तनूनि पाण्डूनि समन्थराणि मुहुर्मुहुर्ज़म्भणतत्पराणि
अङ्गान्यनङ्गः प्रमदाजनस्य करोति लावण्यससंभ्रमाणि।
नेत्रेषु लोलो मदिरालसेषु गण्डेषु पाण्डुः कठिन स्तनेषु
मध्येषु निम्नो जघनेषु पीनः स्त्रीणामनङ्गो बहुधास्थितोऽद्य।

Lustful bodies voluptuously sigh and loosen the clothes
Young women's hearts are enraptured by their
lovers nearness
Cupid makes them lazy pale and thin
Adds beauty as they yawn in a drowsy lust
Making drunken eyes frisky and the temples pale
Slimming their waists and indurating
their breasts and thighs
The love god seats himself in every limb of the damsels

अङ्ग में श्रृंगार निद्रालस
नया सा लग रहा है
वचन में कुछ लालसा मद
श्वास कंपित हो रहा है,
कुटिल कर भ्रू नयन तीक्षण
कटाक्ष करते काम सबल,
रे मदालस गौर स्तन पर
विलासिनि अत्यन्त विह्वल
रक्त कुंकुम शीत चन्दन
और कालीयक मनोहर
या प्रियङ्गु स्नि गंधमय
कस्तूरिका का लेप कर कर
रणित नूपुर मञ्जु भरती
काम को करती विचपल
प्रिये आया मधु सुकोमल !

अङ्गानिनिद्रालसविभ्रमाणि वाक्यानिकिंचि मदालसानि
भ्रूक्षपाजिह्मानिच वीक्षितानिचकार काम प्रमदाजनानाम ।
प्रियङ्गु कालीय ककुंमाक्तं स्तनेषु गौरेषु विलासिनीभि
आलिप्यते चन्दनमङ्गनाभिमदालसाभिमृगनाभियुक्तम् ।

Drowsy adornment in their limbs enraptures
warm breaths and desirous words
curves of the brows and glances askance
flare up the cupid s flame
Besmearing kumkum white sandal
Kaliyaka Priyangu and fragrant musk
On their intoxicated bodies and snowwhite breasts
Young women tinkle their nupurs
and even render Cupid passionate

काम मद से अलसतन
निज वस्त्र व भारी हटाके
धूप कालगुरु सुरभिमय
वस्त्र सूक्ष्म सुगंधि वाले
लाक्षा रस राग रञ्जित
पहनत हैं स्वर विलासी
रागहृष्ट प्रसन्न होकर
पुंस्कोकिल निज प्रियारी
आम्ररस आसवमुदित हो
मुखर चुंबिन कर रहा है
अब कमल पर गूंज अलि
प्रेयसि मनाता चल रहा है
ताम्रस्तबक प्रवाल आनन
आम्र पुष्पित झूमता कल
प्रिये मधु आया सुकोमल !

गुरूणि वासांसि विहाय तूर्णं तनूनि लाक्षारसरञ्जितानि
सुगंधि कालागुरुधूपितानि धत्ते जनः काममदालसाङ्गः ।
पुंस्कोकिलश्चूतरसासवेन मत्तः प्रियां चुम्बति रागहृष्टः
कूजद्द्विरेफोऽप्ययमम्बुजस्थः प्रियं प्रियायाः प्रकरोति चाटु ।

Putting off heavy garment from lustful drowsy bodies
Voluptuous men wear fine clothes scented by
kalaguru fumes,

and dyed by Laksha paints
Drunken with mango juice happy male kokil
kisses his beloved amorously
Now the black bee buzzes on the lotus
to woo his paramour sweet
Copper coloured mango blossoms are swayed
by the breeze of the spring

आम्र शाखा पुष्पभार
पवन में कम्पित पवन रे
मूल तक विद्रुम अरुण सा
ताम्र पल्लव पल्लवित रे
कुसुमपूर्ण अशोक रह रह
प्रोषिताओं में सुलग भर
झूमता है मलय के मृदु
स्पर्श से अनुराग भरकर।
मत्त अलि चुम्बित कुसुम प्रिय
पवमय किसलय अरुणतर
सुघर कलिकावत मनोहर
आम्र शाखी उर विकलकर
समुत्सुक करता हृदय को
गंध जर्जर अलस परिमल
प्रिये मधु आया सुकोमल !

ताम्रप्रवालस्तबकावनम्राश्चूतद्रुमा पुष्पित चारुशाखा
कुर्वन्ति काम पवनावधूता पर्युत्सुक मानसमङ्गनानाम् ।
आमूलतो विद्रुमरागताम्र सपल्लवा पुष्पचय दधाना
कुर्वन्त्यशोका हृदय सशोक निरीक्ष्यमाणा नवयौवनानाम् ।
मत्तद्विरेफ परिचुम्बित चारु पुष्पा मन्दानिला कुलितनम्रमृदु प्रवाला
कुर्वन्ति कामिमनसा सहसोत्सुकत्व चूताभिरामकलिका समवेक्ष्यमाणा ।

Blossomed mango branches wave in the breeze
Coral hued flower laden Asok swings slowly
and excites the damsels
Black bee kissed lovely flowers
and tender leaves shaken by the breeze
And sprouting mango trees engulf the hearts
and set the lovers eager for Cupid s sports

१०८

लो प्रिये ! मुख श्री मनोरम
देखत जो तप्त होकर
देखते कुरुबक मन्दिर नव
मञ्जरी का रूप क्षण भर
कामशर से व्यथित होते
क्या करे तब रे प्रवासी ?
कुसुम से भर दीप्त किंशुक
राशि नव ज्वाला शिखा सा
लो कि अब सुखमय विकंपित
मलय से आरक्त चंचल
रक्त वसना नववधू सी
वसुमती निखरी सुनिर्मल
प्रिये मधु आया सुकोमल।

कान्तामुखद्युति जुषामपि चोद्गतानां शोभां परां कुरबकद्रुममञ्जरीणाम्
दृष्ट्वा प्रिये सहृदयस्य भवेन्न कस्य कन्दर्पबाणपतनव्यथितं हि चेतः।
आदीप्तवह्निसदृशैर्मरुतावधूतैः सर्वत्र किंशुकवनैः कुसुमावनम्रैः
सद्यो वसन्तसमये हि समाचितेयं रक्तांशुका नववधूरिव भाति भूमिः।

They who look at the damsel s beautiful face
and then behold the kurubaka groves
How can their hearts escape from cupid s darts ?
Wearing flower laden kinrukas[1] like deep red flames
shaken by the breeze
The earth appears a bride decked in scarlet robes

1 trees

ऋतुसंहार

१०६

योपिता मुख श्री निहित ह
तरुण जन के हृदय आतुर
मुखर शुक मुख लाल किंशुक
किस कर दते न कातर ?
कर्णिकारो ने न किसके
हृदय दग्ध किये अचानक ?
और कोकिल के मधुर
कूजन न किसके मारत शर ?
कल वचन उन्मान्तापिन ,
पुस्कोकिल गूजते हैं
मदिर कल गुञ्जन उठा कर
भृग रह रह घूमत हैं,
कुल गहो म विनय शालिनि
कुलवधू का हृदय क्षण म
लाज से भरते चपल ये
विकल करते मुग्ध मन म
तार स चकारता मदु
समीरण लहरा रहा चल,
प्रिय आया मधु सुकोमल !

किं किंशुक शुकमुखच्छविभिर्नभिन्न किं कर्णिकार कुसुमन कृत नु दग्धम
यत्कोकिल पुनरय मधुरवचोभियूना मन सुवदनानिहित निहति।
पुस्कोकिल कलवचाभिरपात्तहर्ष कूजद्भि र मन्कलानि वचासि भृङ्ग
लज्जान्वित सविनय हृदय क्षणन पर्याकुल कुलगहऽपिकृत वधूनाम।

Who is not moved by kinsukas

red like a parrot s beak ?

Who is not set to flames by the Karnikaras !

Whose heart escapes cupid s darts

when the cuckoo sings !

And whose patence stands a damsel s lovely face ?

With a passionate fever the male cuckoo sings,

And black bees hum in musical notes

Modext bride's eyes now bashfully gleam

when she hears the passionate kokil's cry

आस भर नीहारिका के
स्पर्श की मनहर अनिल रे
कुसुममय सहकार शाखा
को विकम्पित कर चपल रे
कोकिला का श्रवणप्रिय
कूजन दिशाओं में गुंजाता
हृदय को हरता विवश कर
कुञ्ज छाया को रिझाता
सविभ्रम वधु का मधुर
रमणीय उज्ज्वल हास्य खिलता
कामजित् मुनि का हृदय भी
देखकर अब स्थिर न रहता
रागमलिन तरुण हृदय अब
क्या करें अति मुग्ध व्याकुल
प्रिये मधु आया सुकोमल !

आकम्पयन्कुसुमिता सहकार शाखा विस्तारयन्परभृतस्य वचांसि दिक्षु
वायुर्विवाति हृदयानि हरन्नराणां नीहार पातविगमात्सुभगो वसन्ते।
कुन्द सविभ्रमवधूहसितावदातै रुद्योतितान्युपवनानि मनोहराणि
चित्तं मुनेरपि हरन्ति निवृत्तरागं प्रागेव रागमलिनानि मनांसि यूनाम् ॥

In the hope of a contact with dew drops cool,
shaking the blossoming branches of the mango trees
echoing the sweet songs of the kokils
playing with the shadows in the groves
The spring breeze glides with a zealous gait
Then a smile twitches on the bashful bride s lips
Behold ! even sages can not stand that mutely
The lustful youth ! What a torture to their hearts !!

नितबो पर हेमरशना
हार चचत्र हैं स्तनो के
कोकिला का नाद प्रतिध्वनि
कर रहा प्रत्युत्तरा से
शिथिल करते मदन का भी
गव लों वे गात कोमल
पुलकत पवत शिला क
जाल ले अनि नाद से कल,
आम्र मञ्जरिया निरखकर
विकल हो जाते प्रवासी
उच्चस्वर करते विलाप
दिगात तक छाई उदासी,
मानिनी के हृदय म
शरतीष्ण मधु फिर फिर चुभाता,
कुसुमभाम अनङ्ग की
पगचाप का दिशि दिशि गुजाता
समद मधुकर पुस्कानिल
कूजता तर तरु सुविह्वल
प्रिय मधु आया सुकोमल !

आलम्बिहेमरसना स्तनसक्तहारा कदपदर्प शिथिलीकृत गात्रयष्टय
मास मधौ मधुरकोकिलभृङ्गनादनायो हरन्ति हृदय प्रभस नराणाम ।
नानामनाज्ञकुसुमद्रुमभूषिताना हृष्ट्वा वपुष्ट निनन्दाकुलमानुदशान
शलयजान परिणाद्धशिलातलौघान्त्वा तन शिखिभनोमुखमनि सव ।
नत्र निमीलयन्ति रोदन्ति यान्ति शाक घ्राण करग विरणद्धि विरौति चोच्च
कान्ताविययोगपरिखेदितचित्त उत्ति दष्ट्वा्चाम्रग कुसुमिता महाराखशान ।
समद मधुकराणा कोकिलाना च नाद कुसुमितसहकार कर्णिकारैश्च रम्य
इपुभिरिव सुतीक्ष्णमानम मानिनीना तुदति कुसुममासा मन्मथोद्वेजनाय ।

The girdle on the hips and the pearl strings
on the breasts quiver,
The kokil s notes resound in the air,
And women make even the Love god crazy
Rocky mountains echo with lovely notes,
And love lorn travellers lament aloud
when they behold the charms of beauty everywhere
Fresh flowers pierce the hearts of arrogant women
like sharp arrows,
And frenzied notes of the kokil overflow on the trees

मधु सुरभिमुख कमल सुन्दर
लोध्र के स ताम्र लोचन
कुरबका स ग्रथित अलकें
पीनगुरुतर दीप्तिमयस्तन
सुमासल मनहर नितब
किस न कर दते मुचचल
काम के यह अग्रदूत
सुरभि भरे निश्वास आकुल
ओ विसुध सीमंतनी !
मधु वदनाकर प्राण विह्वल
प्रिये मधु आया सुकोमल !

मधसुरभिमुखाब्ज लोचन लोध्रताम्रे
नवकुरबकपूर्ण केशपाशो मनोज्ञ ।
गुरुतरकुचयुग्म श्रोणिबिम्ब तथव
न भवति विमिन्नानी योषिता म मथाय ।

Lovely fragrant lotus faces of women
Lodhra ruddy eyes
Locks of hair adorned by kurubakas
Round and beautiful breasts
and heavy well shaped hips
Whom do they not malaise ?

११३

सुघर मञ्जुल आम्र मञ्जरि श्रेष्ठ जिसका शर मदन र
रूप किंशुक चाप ज्या अलि, शुभ शशि है छत्र जिसके,
मलय गज उन्मत्त कोकिल वन्दिजन हैं लोकजित र
वह अनङ्ग कर सभी का मधुर मङ्गल प्रीति हित ल
करे नव कल्याण जग का स्नेह बरस सरस मङ्गल।
प्रिय मधु आया सुशोभन।

आम्रीमञ्जुल मञ्जरी वरशर सत्किंशुक यद्धनु—
ज्र्यायस्यालिकुल कलङ्करहित छत्र सितांशु सितम
मत्तेभो मलयानिल परभृता यद्वन्दिनो लोकजि—
त्सोऽयं वो वितरीतरीतु वितनुर्भद्रं वसन्तान्वित।

Lovely blossoming mango groves are his

lovely arrows

Kinshuka is the bow and black bees its string
Bright moon is his imperial canopy

And the spring breeze is his mighty elephant

Kokils sing like minstrels

Behold ! He has conquerred the worlds
May that victorious Cupid shower benefaction on all

ooo

अनुक्रमणिका